मासिक—

मानव मन्दिर

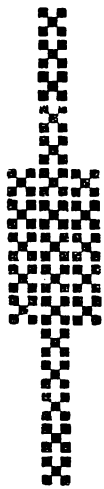

सम्पादक : एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

| वर्ष ६ | वीरवार १० मई १९७९ | संख्या १ |

मेरे पास जितने आदमी आते हैं सब दुखी आते हैं। यह सरदार यहां पांच छः दिन से बैठा हुआ है। रात को मेरे मकान पर गया। घर, ज़मीन, भाई के झगड़े। ये जितने हमारे संसार के झगड़े हैं और जिनके लिए हम दौड़ते फिरते हैं, मेरे अनुभव में कोई नई चीज़ आई है, वह यह कि ये हमारे पिछले कर्म हैं। जिस जिससे लेना है उस-उस से लेना है और जिसे देना है उसे देना है। जो कुछ हमने पीछे किया हुआ है वह भुगतना पड़ेगा, कोई रोक नहीं सकता।

नई बात जिससे मुझे पूरा विश्वास हो गया, वह यह है कि नागी साहिब बटाले के एक डाक्टर हैं, जो यहां आया करते हैं। उनका एक लड़का हरियाणा में Superintendant Police है, जो वहां पुलिस ट्रेनिंग कालेज में प्रिंसिपल लगा हुआ है। उसके पेट में दर्द हुई। वह वहां पांच चार दिन रहा। आखिर तंग आ कर उन्होंने उसे चण्डीगढ़ भेज दिया। एक डिपटी सुपर टेन्डेंट (Deputy Superintendant) पुलिस है जो उस Superintendant के साथ रहा है और वह ज्योतिषि भी है। उसके बाप डाक्टर नागी साहिब ने इस का टेवा बना कर उसके पास भेज दिया कि मेरा लड़का

बीमार है आप कुछ बताओ। उसने उनको लिखकर भेजा कि अमुक अमुक ग्रह हैं यह इकत्तीस जनवरी से पहले पहले हस्ताल से (Discharge) हो जायेगा और उसे आराम आ जायेगा मगर टाक्टर Diagnose नहीं कर सकेंगे कि यह क्या बीमारी है। उसने वह पत्र डाक्टरों को दिखाया डाक्टरों ने Nonsense कहकर पत्र को फेंक दिया और कहाकि P.G.I में भी हम Diagnose न कर सकेंगे तो और फिर कहां होगा ? बारह: दिन तक बारह: X-ray लिये, कई बार Screening के टीके लगाये मगर उसकी दर्द अपने आप ही बन्द हुई मगर कुछ वे Diagnose न कर सके, आखिर Not diagnosed लिखना पड़ा। ऐसी बातों से सिद्ध होता है कि जो कुछ हमारे साथ होना है वह पहले ही हमारे भाग्य में है। हम उसको बदल नहीं सकते। हमने जो पिछले कर्म किये हुये हैं उनका फल हमें मिलता है। उसे हम नहीं बदल सकते। जिसे घाटा पड़ना है उसे घाटा पड़ेगा, जिस किसी ने मरना है वह मरेगा और जो कुछ होना है वह होकर रहेगा। हम गृहस्थी लोग इस पागलपन में आकर गुरुओं के पास दौड़ते हैं। मुझसे भी डाक्टर नागी ने टैलीफोन

पर बोला, मेरे मुँह से सहज स्वाभाविक ही निकल गया कि दो चार दिन में बिल्कुल ठीक हो जायेगा, घबराओ मत। क्योंकि वे मुझपर विश्वास करते हैं, इससे उन्हें काफी हौंसला (ऊत्साह) हो गया।

मैं क्या कहना चाहता हूं ? ऐ मानव ! तुमने जो इस जन्म या पिछले जन्म में कर्म किये हैं उनके फल से तुम्हें कोई महात्मा, गुरु, कोई राम कृष्ण नहीं बचा सकता। कैसे मानूं कि बचा सकता है। कृष्ण जी महाराज, जिनको पूजते हैं और कहते हैं कि हमारे दुखों को दूर करेंगे उनका अपना सारा परिवार शराब पी कर एक दूसरे के सिर काटकर सब मर गये। जो आदमी अपनी संतान की ठीक न कर सका, तुम उसका नाम लोगे तो वो तुम्हें कैसे ठीक करेगा ? तुम मेरी बात को सोचो। हम गुरु लोग स्वयं बीमार होते हैं और हमारे बच्चे भी मरते हैं। तुम गृहस्थी गुरुओं के पास जाते हो और कहते हो, मेरे बच्चे को स्वस्थ कर दो, मेरा यह करदो और वह करदो। अरे ! जब इन गुरुओं के अपने बच्चे, स्त्रियें आज्ञाकारी नहीं थी तो तुम जो इनके पास जाकर वे चीजें मांगते हो, तुम कैसे आशा कर

सकते हो कि वे तुम्हें कुछ देंगे ? होश की दवा करो ।

मैंने अगर यह काम किया है तो यह मेरा कर्म और ऐसे ग्रह हैं । एक पंडित ने मेरा टेवा देखकर मुझे बताया था कि तुम्हारे नवग्रहों का प्रभाव पिछली आयु में नोवें घर में पड़ता है । दूसरा कोई ज्योतिषि इसका मतलब नहीं निकाल सकता । मैंने बहुत टेवे देखे हैं, ऐसा किसी का टेवा नहीं मिला । आप कोई ऐसा काम करेंगे जो आज दिन तक किसी ने नहीं किया । यह मुझे पता नहीं कि आप क्या करेंगे । तुम गृहस्थी हो और मैं भी गृहस्थी हूं । जो हमने कर्म किये हुये हैं उनके अनुसार हमपर दु:ख सुख आते हैं उसके लिए हाय २ करने, रोने पीटने और सिर मारने से क्या लाभ यह किसी के वश की बात नहीं ।

"होए वही जो राम रचि राखा"

संसारी दुखों के लिए गुरुओं, मंदिरों और मसजिदों में मत जाओ । वह तो जो :—

लिखिया ललाट टरे नहीं टारा ।
भावी को को मेटन हारा ।

तुलसी दास जी ने भी कहा है ।

अनहोनी होनी नहीं ।
होनी हो सो हो ।

पिछला तो जो कुछ हो गया सो हो गया । इससे यह सबक लो कि आगे अपने कर्मों को न बिगाड़ो । वह यह है कि अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी के साथ शत्रुता, हेराफेरी, धोखा फरेब और चार सो-बीस मत करो । यही कर्म का बिगाड़ना है । आज शब्द निकला था कि सत्गुरु कौन है ?

मुझे पता नहीं कि "नैनन अलख लखावै" से कबीर साहिब का क्या भाव है । अलख कहते हैं जो लखा नहीं जाता । अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर चन्द ! मर जायेगा । पहले तू बता तूने नैनन से अलख को देखा ? मैंने जो समझा वह कह देने का हक्क रखता हूं । मुझे तो अलख तुम लोगों ने लखाया । आप लोग मेरे सच्चे सत्गुरु सिद्ध हुये हो । मैंने नैनन अलख क्या लखा ? मैं राम को मिलने चला था । मेरा मालिक कहां है ? पहले उसका रूप बनाता था । वहां से भी अनुभव ने हटाया । फिर

दाता दयाल के रूप को भगवान मानकर या मालिक मानकर उसका ध्यान करता था। अब जब तुमसे मुझे यह पता लगा कि मैं तो कहीं जाता नहीं न मुझे पता होता है तो मैं इस परिणाम पर आया कि न कोई दाता दयाल मेरे अन्तर आता था न कोई राम कृष्ण आता था। जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता है यह सारे का सारा मेरा अपना ही मन था। उसीने मुझे चक्कर दिया हुआ था। फिर मैं आगे जाता हूं। मन के जितने रंग रूप हैं उन्हें छोड़ जाता हूं। जिस मालिक को मैं तलाश करता था वह क्या निकला ? प्रकाश है और शब्द है। प्रकाश को देखता और शब्द सुनता हूं और उस चीज़ की तलाश करता हूं जो मेरे अन्तर प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। उसका पता नहीं लगता कि वह क्या है ? मैंने अलख को ऐसे समझा। मैंने जो देखा है और जिस ढंग से देखा है वह मैंने आपको बता दिया।

भाई कोई सतगुरु सन्त कहावै, नैनन अलख लखावै।

मैंने मूर्खता या सच्चाई से अपने आपको सन्त सतगुरु कहा है मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर

अपनी ज़मीन और भाई के बारे बातें बता कर रात को घण्टा भर मेरी जान खाई। कुछ दिन हुये, एक और आदमी मेरे पास आया, कहने लगा कि मेरा छोटा भाई मेरी स्त्री पर बुरी दृष्टि रखता है। ऐसे प्रश्न लेकर लोग मेरे पास आते हैं। यह संसार क्या है? मेरी समझ में नहीं आया। सिवाय दुखों के और कुछ नहीं। इस वास्ते संतों ने एक और उपाय निकाला है। मगर मुझे यह पता नहीं कि जो उपाय उन्होंने निकाला है उससे वे सन्त बच गये? जो कुछ मैंने गुरु बन कर समझा है। अगर यह ठीक है तो जिन गुरुओं ने इस बात का परदा रखकर हम लोगों को मूर्ख बना कर लूटा है, हमें सच्ची बात नहीं बताई और अपने पीछे लगाया उन का वेड़ा कहां पार हुआ होगा। क्योंकि कर्म का फल हर व्यक्ति को भोगना पड़ता है। इस वास्ते मैं इस बात पर ज़ोर देता हूं कि पीछे जो कुछ हो गया, आगे अपने आपको बचाओ।

डोलत डिगै न बोलत बिसरै, जब उपदेश दृढ़ावै।

जब वह किसी को उपदेश देता है तो वह जो असलियत है उसे नहीं भूलता। मैं नहीं भूलता।

कितनी सच्चाई से बात करता हूं। यद्यपि मैं जानता हूं अगर किसी को सच्चाई तथा नंगी असलियत बता दी जाये तो कोई मुझे पैसा नहीं देगा और न मान प्रतिष्ठा करेगा। अगर परदे में रखता तो तुम लोगों को खूब लूटता मगर मैंने परदा नहीं रखा।

प्रान पूज्य किरया ते न्यारा, सहज समाधि सिखावै।

हमारी अन्तिम अवस्था क्या है ? सहज समाध। जो सारा जीवन अधिक अभ्यास करते रहते हैं वे पागल हैं। अभ्यास सहज स्वभाव से होता है। मन के विचारों को छोड़ कर आखिर ऐसी अवस्था आ जाती है जहां मुझे यत्न नहीं करना पड़ता है न सुमिरन करना पड़ता है न ध्यान करना पड़ता है, न शब्द सुनना पड़ता है और न प्रकाश देखना पड़ता है। मेरा अपना आप इस जगह जाकर ठहर जाता है। सब कुछ भूल जाता हूं और शान्ति मिल जाती है। यह मुझे मिला है और यही कबीर साहिब आगे कहते हैं।

द्वार न रूंधे पवन न रोकै, नहिं अनहद उरझावै।

सत्गुरु वह है जो जीव को वहां पहुंचादे जहां उसे शब्द को भी सुनने की आवश्यकता नहीं। यह

शब्द योग केवल अनुभव कराने के लिए है। यह देखने के लिए कि मैं कौन हूं, हमारा आपा क्या चीज़ है ? इस वास्ते अभ्यास कराया जाता है। शब्द योग अन्तिम अवस्था नहीं है। अनहद और चीज़ है और जो सुनने वाली चीज़ है वह और है। अन्त में अपने आप में ठहरना है। जो यह शिक्षा दे वह सत्गुरु होता है।

यह मन जाए जहां लग, जबही परमातम दरसावै।

उसका मन जहां २ जाता है उसको एक ही चीज़ दिखाई देती है और यही सनातन धर्म कहता है।

जहां जहां उसका मन जाता है वह समाधि का आनन्द लेता है।

करम करै निःकरम रहै जो, ऐसी जुगत लखावै।

कर्म करता हुआ अकर्मक रहता है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्या यह सम्भव है ? हां है। कैसे ? मुझे आप लोगों से किसी से कोई इच्छा नहीं। आप आते हैं, आपके विचार के साथ लगकर आपके साथ बात कर लेता हूं या आपको कोई बात कह

देता हूं क्योंकि मेरा कोई निजी स्वार्थ नहीं। इस वास्ते मैं कर्म करते हुए अकर्मक हूं। अगर मैं अपने निजी स्वार्थ के लिए काम करूं तो मैं कर्म करता हुआ अकर्मक नहीं हूं। वह आदमी अपने निजी स्वार्थ, झूठे मान, ग़लत पैसे के लिए किसी के साथ बिल्कुल कोई धोखा फरेब, हेराफेरी नहीं करता। मगर किसी समय मैं गिर जाता हूं। दो दिन पहले की बात है एक सत्संगन की लड़की का विवाह था। मैं वहां गया। जो कुछ उन बच्चों को देना था वह रख दिया। फिर दिल में ऐसा प्रेम का जज़्बा उठा कि मेरा गला भर गया और आंखों में आसू आ गये। मेजर बखशीश सिंह जो लड़के का बाप है, वह मेरा पुराना मित्र है। वह आया। मैंने उसे बड़ी कठिनता से कहा कि तेरा मेरा प्रेम था। यह लड़की मैं अपनी समझ कर तुम्हारे लड़के को देता हूं। इतना कह कर मैंने वहां से भागने की कोशिश की कि ऐसा न हो कि आंसू बहने लग जायें। फिर जब यहां मन्दिर के अन्दर आया तब मुझे होश आई। अब अपने आप से पूछता हूं कि मेरा वह ज्ञान ध्यान कहां गया, जो मैं आप लोगों के सामने वर्णन करता रहता हूं ? मैं

गिरा कि नहीं गिरा ? मां वाप मर गये नहीं रोया, लड़के लड़कियां मर गये, नहीं रोया, स्त्री मर गई नहीं रोया मगर यहां मुझे क्या हो गया ? अगर परमार्थ के प्रेम में रोता तो कोई दुख नहीं था। इस वास्ते मैं दुखी हूं। I fall. मेरे जुम्मे एक ढोल पड़ा हुआ है वरना मैं भी गिर जाता हूं। इस वास्ते मैं दुखी हूं। वह जो मेरा (Action) था उससे स्पष्ट हो गया कि मैं गिर गया। मुझे क्या हुआ ? पता नहीं। मैं कुछ नहीं जानता। मगर मेरे वश की कोई बात नहीं थी, मैं क्या करता। यह मार्ग बड़ा कठिन है। दाता दयाल ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। मैं सबसे अच्छी बात गृहस्थियों के लिये यही कहूंगा कि ऐ मानव ! तू इस योग आदि के पीछे मत पड़। एक अपने आपको उस मालिक का, उसका एक रूप मान कर अपनी नीयत को साफ रख कर अपने वास्ते अपनी ग़रज़ के लिये किसी के साथ धोखा मत कर, अपने आपको उसके अर्पण करता रहा कर। मैंने सब से आसान उपाय यह समझा है। जो चीज़ हमारे बस में नहीं हम क्या करें। हमारे कर्मों के अधीन है। तो सब से बेहतर बात

साधारण गृहस्थियों के लिये मैंने क्या समझी कि घरों में प्रेम और स्नेह रखो, मानसिक शारीरिक ब्रह्मचर्य रखो, अधिक विषय न कमाओ और अपने आपको सच्चे बनकर मालिक के अर्पण करो। वह गुरु और मालिक तुम्हारे अन्तर रहता है, तुम्हारे दिल में रहता है। होशियारपुर, ब्यास, आगरा या किसी और जगह नहीं रहता। यह बिल्कुल सच्ची बात है। गुरु इसलिए धारण किया जाता है कि हमारे भ्रम और शंकाएं चली जायें। गुरु का काम शान्ति देना और भव के दुख मिटा देना हूं। भव मन के सारे विचारों को कहते हैं। सत्संग करा कर ज्ञान देकर उसे शान्ति दिला देना है। यह गुरुमत है जो मैंने समझा है। शेष जो कुछ किसी को मिलता है, यह उसका अपना विश्वास और श्रद्धा है। जो कुछ करते हो, तुम करते हो मैं कुछ नहीं करता। लोग मेरा ध्यान करते हैं और उनके काम हो जाते हैं, लेकिन मुझे तो पता भी नहीं होता। फिर देने वाला कोन है ? उनका अपना ही विश्वास और अपना आप है। तुम अपने विश्वास से आप ही पूर्ण हो।

सदा विलास त्रास नहीं मन में, भोग में योग लगावै।

वह गुरु कौन है ? जो प्रसन्न रहता है, भय नहीं खाता, निर्भय रहता है, उरझता नहीं। यह गुरु के गुण हैं।

धरती त्यागि अकासहु त्यागै, अधर मड़इया छावै,
सुन्न सिखर के सार सिला पर, आसन अचल जमावै।

अब मैं किसी का ध्यान भी नहीं करता। अपने आपको ऊपर ले जाने की कोशिश करता रहता हूं मगर आप लोगों को ऐसा नहीं करना चाहिए। आप गृहस्थी हो। गृहस्थी के लिये रूप का ध्यान करना अति अवश्यक है वरना तुम्हारा संसारी जीवन सफल नहीं होगा। सन्तों के जीवन की और दशा है। आप संसारी हैं। आवागवन से बचना चाहते हैं तो और बात है। वरना सर्वसाधारण के लिए मेरी निजी राय यह है कि एक रूप बना लो जिस जगह तुम्हारी इच्छा हो। उसको पूर्ण मानो। उसका उठते बैठते, चलते फिरते ध्यान किया करो। तुम्हारे सारे काम हो जायेंगे। तुम्हारे अपने ही ध्यान की शक्ति और विश्वास से काम पूरे हो जाते हैं :-

भीतर रहा सो बाहर देखै, दूजा दृष्टि न आवै।

उसे ज्ञान हो जाता है कि यह सब खेल उस एक मालिक का है। मुझे यह समझ ९३ साल की आयु में आई है। अब मेरा साधन केवल शरणागतं है। वह एक शक्ति है, अपने आपको उसके सुपुर्द करता रहता हूं। अब मेरी यह दशा है :-

कहत कबीर बसा है हंसा आवागवन मिटावै।

कबीर साहिब कहते हैं जो ऐसा गुरु है, जिसमें ये गुण हों, वह दूसरों का आवागवन मिटा सकता है। वे गुरु आवागवन नहीं मिटा सकते जो यह कहते हैं कि हम तुम्हें लेने गये थे, हमें मूर्ख बना कर लूटा है। गुरु लोग कहते हैं कि नाम ले जाओ अन्त समय तुम्हें गुरु आकर सतलोक ले जायेगा। यह बिल्कुल झूठ है। लोग मरते हैं, मेरा रूप जाता है। कोई कहता है हाथी ले आया, कोई घोड़ा बताता है और कोई पालकी बताता है। मेरे तो बाप को पता नहीं होता कि कौन मर गया। दूसरा शब्द है :-

अवधू निरंजन जाल पसारा।

सन्त क्या कहते हैं ? कि इस संसार का पैदा करने वाला अलख निरंजन अर्थात ज्योति स्वरूप

ज़ालम है। अवधू योगी को कहते हैं। योगी ही अलख निरंजन कहते हैं। कबीर साहिब कहते हैं तेरे अलख निरंजन ने जाल बिछाया हुआ है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं अगर बिना प्रमाण के सन्तों की हां में हां मिलायेगा तो तू कुष्टी हो कर मरेगा। तू बता क्या यह ठीक है ? मैं कहता हूं हां, ठीक है।

कबीर साहिब कहते हैं कि जितना यह तीन लोक बसा हुआ है, यह सब काल निरंजन का है। इस वास्ते सन्त इस ईश्वर को नहीं पूजते जो संसार को पैदा करता है। इस काल निरंजन का अंश हमारे अन्तर हमारा मन है। तुम ही देखो। हम तुम अपनी खुशी, आनन्द और सुख के लिए बच्चे पैदा करते हैं कि नहीं करते ? तुमने कभी सोचा है कि जो बच्चा पैदा होगा चोर या डाकू बनेगा, कैंसर टी-बी या कैसे मरेगा ? तो जैसा निरंजन था वैसा तुम्हें बना दिया। हम भी ज़ालम हैं, ज़ुल्म करते हैं।

जितना भारत वर्ष में इस समय दुख है उसका सारा कारण यह है कि बिना बुलाये हुये बच्चे संसार में पैदा हुये हैं। कौन है जो स्त्री के पास केवल बच्चे

के विचार से जाता है ? वह तो अपने स्वाद के लिए जाता है। फिर बच्चा पेट में आ जाता है। जैसे मां के विचार होते हैं वैसे बच्चे होते हैं। फिर हम शिकायत करते हैं कि हमारे बच्चे हमारे कहे नहीं लगते, हमारे विरुद्ध हैं, यह है वह है। आजकल नौजवानों का क्या हाल है। यह क्या है ? यही तो काल और माया है। इस वास्ते मैं कहा करता हूं कि संतान को संतान के विचार से पैदा करो तब कल्याण है। मां बाप कर सकते हैं। जैसे वे आप होंगे वैसे बच्चे पैदा होंगे। जैसे वे विचार देंगे वैसे बच्चे पैदा होंगे।

तुम आप देखलो। तुम भी हो और हम भी हैं और पिछले ज़माने के आदमी क्या करते थे ? पिछले ज़माने के आदमियों में सत होता था। मैं पहले भी आपको कहानी सुनाया करता हूं कि मैं बग़दाद से आया। मेरी मां ने कहा कि तेरा बड़ा ताया बंकूराम है उसे मत्था टेक आ। मैं चला गया। उसकी स्त्री मर गई थी। बाल बच्चा कोई नहीं था। उसके मकान के अन्तर चार बूढ़े बैठे हुये थे। मेरा ताया सबसे छोटा था। वह अंगीठी के पास बैठा हुआ था

पहाड़ में मकानों के अन्तर अंगीठियां होती हैं। उसे तम्वांकू की अवश्यकता पड़ी। उसने एक को कहा भाई तम्वाकू की थैली देदे। तो वह उसे मज़ाक करता है, कि तेरी शक्ति कहां गई ? तो एक ने कहा तू बता भई ! अपनी आयु में स्त्री के पास कितनी बार गया है ? उनमें एक का नाम मसंद था। वह कहता है मैं अपनी स्त्री के पास सात बार गया और सात लड़के पैदा हुये। दूसरे ने कहा मैं अपने जीवन में स्त्री के पास चार बार गया और चार लड़के पैदा हुये। तीसरे ने कहा-भाई। मैं लग भग सौ बार गया हूं सात बच्चे पैदा हुये और सातों मर गये। मेरे ताये ने कहा भाई ! मेरे पास तो कोई हिसाब नहीं। मैंने तो कोई कसर नहीं छोड़ी। इस बात को सुन कर मेरे पांव की मिट्टी निकल गई मत्था टेकना तो मैं भूल गया, अपने कुकर्म का जीवन याद आया और अपने मकान पर आकर छत पर बैठ कर अपने जीवन पर सोचता रहा और रोता रहा कि ये बूढ़े आदमी इनका क्या हाल है और हमारा क्या हाल है। मैंने क्या किया ? इस समय हमारा

जितना दुख है वह हमारे विषय विकार का जीवन है।

आजकल क्या रिवाज है ? चाहे बेटे बेटियां पोते पोतियां वाले हो, मियां बीबी की चारपाई दोनों की साथ साथ रहती हैं। एक ही जगह पर दो चारपाईयां या एक ही चारपाई होती है जिस पर दोनो सोते हैं। कौन आदमी है जो रह सकता है। यह जितनी विपत्ति इस समय हम पर है। यह सब हमारे विषय विकार के जीवन की है। मेरे पर भी जो कुछ बीता और मैं अशांत रहा उसका भी यही कारण है। मैं बच गया। बारह साल बसरे बगदाद रहा, घर में आया फिर फंसा, फिर होश आ गई और बच गया। मेरी स्त्री २८ साल तक जीवित रही हम पति पत्नि बनकर नहीं रहे। आप मेरी बात को समझ गये।

आप लोग मेरे पास आते हैं। मैंने अपने आपको समय का संत सत्गुरु कहा है। जो इस समय आवश्यकता है वह मैं आपको कहता हूं कि अपने आपको कंट्रोल में रखो। यह संसार ज्योति स्वरूप ज्योति निरजंन ने बनाया है। संत संसार के पैदा

करने वाले को नहीं पूजते। वे उस परम तत्व आधार जो कुटस्थ है अनामी, अकाल और दयाल है उसे मानते हैं। क्योंकि यह संसार दुख की खान है। कोई सुखी है तो बताओ ? तुम लाख ईश्वर की भक्ति करो अगर तुमने पाप किये हैं तो ईश्वर तुम्हारे पापों को क्षमा नहीं करेगा। सबको भुगतना पड़ता है। अवतार भुगत गये। सब भुगत गये।

स्वर्ग पताल जीव मृत मंडल, तीन लोक विस्तारा।
ब्रह्मा बिष्णु सिव प्रकट कियो है, ताहि दियो सिर भारा।

आप बताओ क्या झूठ है ? बिल्कुल सच्च है। गंगा के पाण्डे और हम गुरु लोग आपको सच्ची बात नहीं बताते। हर महीने आते रहो और दसौंध देते रहो। नाम दान देकर यह शर्त लगादी कि दसौंध देते रहो। एक विचारे आदमी को खाने को तो मिलता नहीं वह तुम्हें दसौंध कहां से देगा। न तीर्थ ने तुम्हें तारना है और न मैंने तारना है। तुम्हारा अपना ही विचार, श्रद्धा और कर्म तुम्हारा ही साथी है। गुरु ने केवल सच्चा रास्ता बताना। मैंने अपने जीवन में यह समझा। तुम मेरे भाई हो. मित्र और बच्चे हो। मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने

समझा है यही ठीक है मगर मेरी नीयत साफ है। गुरु ने आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैंने जो स्वयं समझा वह कहा। हो सकता है मैं ग़लत हूं या ठीक हूं।

ठांव ठांव तीरथ ब्रत थाप्यो, ठगने को संसारा,
माया मोह कठिन विस्तारा, आपु भयो करतारा।

तुम्हारे अन्तर मन ईश्वर का रूप है। अंहकार में आते हो कि नहीं आते? यह Universal mind संसार को पैदा करता है। जिस प्रकार बैटरी में Current काम करती है। जो E. M. F Voltage है वह बैटरी में कायम रहता है। इसी प्रकार यह सब संसार बिजली की Energy का है। जो अनरजी का भण्डार है, संत उसे सतलोक कहते हैं। उसमें से जो करन्ट निकलती है वह संसार बनाती है। उसमें से पता नहीं कितनी Current निकलती हैं। कितने ब्रह्माण्ड हैं, कितने विश्नु हैं, कितने शिव हैं और कितने ब्रह्मा हैं, कुछ पता नहीं। लोग कहते हैं, एक ही ब्रह्मा है, यह ग़लत है। संसार अलग अलग हैं। Energy अलग अलग काम करती है।

सतगुरु शब्द को चीन्हत नाहीं, कैसे होय उबारा।

वह कहते हैं जो बात सत्गुरु कहता है उसे तो कोई नहीं समझता। तुम्हारा उद्धार कैसे होगा।

जारि भूंजि कोइला करि डारै, फिरि फिरि लै अवतारा।

जो ज्योति स्वरूप निरंजन है यही तो अवतार लेता है। यही राम और कृष्ण बनकर आया वहां आगे चल कर मछ कछ नरसिंह बन जाता है।

अमर लोक जहं पुरुष विराजै, तिन का मूंदा द्वारा।

अर्थात हमारे मन ने, एक Universal mind बाहर, एक हमारा मन, जो हमारा असली घर था वहां नहीं जाने देता। इस संसार में फंसता है। उस का दरवाज़ा मूंद दिया।

जिन सहिब से भये निरंजन सो तो पुरुष है न्यारा।

फिर निरंजन क्या हुआ ? ज्योति स्वरूप *Light* कहीं से पैदा होती है। अब तो विज्ञान ने मेरी आंखे खोल दी। किसी समाचार पत्र में लिखा था कि विज्ञानकों ने इस सूर्य से बहुत परे एक बहुत बड़ा रौशनी का भण्डार देखा है, जो इस सूर्य से एक हज़ार खरब गुणा बड़ा है। अब बताओ क्या इस संसार का कोई अन्त है ? मानव क्या है ? हम कितनी शेखी मारते हैं। कबीर, फकीर, दाता दयाल

या गुरु नानक की इस संसार में क्या हस्ती है। मैं पूछना चाहता हूं कि कितना संसार है? मगर यह मन अपने आपको बहुत बड़ा समझ कर सब कुछ करता है। बहुत शेखी मारता है, यह करता है और वह करता है।

कठिन काल से बाचा चाहो, गहो शब्द टकसारा।
कहैं कबीर अमर कर राखौ, मानो सब्द हमारा।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्यों भई! क्या तूने अमरपद देखा है उस अमरपद में क्या है जो लोगों को मत देता है? जब से मैं मन के रूप को समझ गया तब से मैं ऊपर जाता हूं। मैं अमर-पद उस अवस्था को कहता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। मैं तो प्रकाश को भी अमर नहीं कहता न ही शब्द को अमर कहता हूं। एक शक्ति है जहां जाकर मैं अपनी हस्ती खो देता हूं, मगर वह हर समय नहीं, कभी कभी यह अवस्था आती है। मेरे अपने वश की कोई बात नहीं। मेरा परिणाम क्या हो कुछ पता नहीं।

आप लोगों को सत्संग दे दिया। आप पर मेरा कोई उपकार नहीं है। मेरा कर्म भोग है। मैंने प्रण

किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। आप लोग आ जाते हैं। आपको ऊंची शिक्षा की आवश्यकता नहीं। इतना तो आप समझ सकते हैं कि अपने निजी स्वार्थ के लिए हेरा फेरी, धोखा फरेब और चार सौ-बीस मत करो। अपने धर्म को पालो। स्त्री, पति, भाई, अपने अपने कर्त्तव्य को पूरा करें एक विश्वास रखो। मालिक एक है। उसका कोई नाम नहीं, सब नाम उसके हैं। जिस रूप में जिस नाम से तुम्हें प्यार है उसका सुमिरन ध्यान करते रहा करो। अपने आपको उसके सुपुर्द करते रहा करो। मैं तो अब यहां आया हूं। मैं सारी आयु कानों में उंगलियां डालकर और दौड़ दौड़कर यहां पहुंचा हूं। मगर यहां मैं ठोकरे खाकर पहूंचा हूं। शगणागत हो गया। तुमसे अगर शरणागत नहीं हुआ जाता, न सही। जो कुछ बन आये करो

दाता ने मुझे काम दिया था और कहा था फकीर। तू न समझना कि तू किसी का बेड़ा पार करेगा। तुझे राधास्वामी दयाल सत्संगियों के रूप में दर्शन देंगे और तुझे आद अवस्था पर पहुंचा देंगे। हो सकता है तुम में ९९ अवगुण हों मगर

क्योंकि एक सच्चाई है, शायद तुम आप भी तरजाओ और दूसरों को भी तार दो। उन्होंने 'शायद' का शब्द कहा था। दोस्तो! मैंने अपने जीवन में जो कुछ समझा वह आप को कहा। मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि आप लोगों को सेहत मिले, खाने को रोटी मिले और तुम्हारे मन को शान्ति मिले। यही कुछ मेरे पास है और कुछ नहीं। घरों में अदब रखो। जिस घर में (*Discipline*) नहीं है वह घर नहीं रह सकता। वहां कुछ नहीं रह सकता। इस वास्ते हमारे हां अदब है। जहां स्त्री पति का अदब नहीं करती और समय पर पति स्त्री का अदब नहीं करता, लड़का बाप का अदब नहीं करता वह घर तवाह हो जाता है। वहां से सुख और शान्ति चली जाती है। राम को मिलना या अभ्यास करना यह आसान है मगर गृहस्थ में रह कर *Peaceful* रहना बहुत कठिन है। अब मुझे संतमत आसान दिखाई देता है जिसे पहले मैं भार समझता था।

सब को राधास्वामी!

सत्संग परम संत परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपर।

दिनांक 1-11-78

गुरु मुख बिन जाने नहीं कोई, गुरु का भेद अपारा।
कहन सुनन की बात नहीं, पोथी ग्रन्थ से न्यारा।
नहीं यह ज्ञान योग की किरिया, नाहीं विवेक विचारा।
घट में चढ़ कर सुने शब्द धुन, सहस कमल मंझारा।
फिर त्रिकुटि के महल में वासा, परसे पद ओंकारा।
सुन्न शिखर पर आसन मारे, त्यागे भरम बिकारा।
महासुन्न में लगी समाधि, सूझे अपर अपारा।
भंवर गुफा सोहंगम दरसे, जगमग जोत उजारा।
सत्त धाम में सतगुरु दर्शन, पावे गुरु मुख प्यारा।
अलख अगम की गति गम निरखे, लख अखंड पसारा।
भक्ति युक्ति के प्रेम से पहुंचे, राधास्वामी के दरवारा।

राधास्वामी ! मैं कल अर्थात एक दिन पहले सवा दो महीने के बाद दौरे से वापिस आया हूं।

दो आदमी कहने लगे कि हम सत्संग सुनकर जायेंगे। पहले मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या मैं सत्संग कराने का अधिकारी हूं ? ये बाणियें पढ़ी। आयु व्यतीत हो गई। मैंने जो कुछ समझा वह कहता हूं।

मैंने यह समझा है कि जितनी बाणियें रची गई हैं ये सब रोचक हैं, यथार्थ नहीं हैं। यह वर्णन शैली लोगों को अकर्षित करने के लिए है जिस प्रकार गाने वाले रेडियो पर गाते हैं कि मैं चान्द का टिक्का लगाऊंगी, तारों के बुन्दे पहनूंगी और हवा की चुन्नी ओढ़ूंगी तो यार को मिलने जाऊंगी। ऐसे ही इन सन्तों ने रोचक और भयानक बातें कहीं है। इन रोचक और भयानक बातों में यह असानी है कि इनसे लोग खिच जाते हैं। जैसे हम छोटे बच्चों को कहते हैं कि अगर तू मिडल पास कर लेगा तो तुझे साईकल ले देंगे। अगर फेल हो गया तो घर से निकाल देंगे। मैंने क्या समझा ? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। गुरु मुख किसे कहते हैं ? यह दाता दयाल महर्षि शिवव्रत-लाल जी महाराज की बाणी है :-

गुरु मुख बिन जाने नहीं कोई, गुरु का भेद अपारा।

पहली बात यह है कि अगर कोई आदमी गुरुमुख नहीं है और मेरी किताबों को पढ़ता है तो उसे कोई लाभ नहीं जब तक वह भेद को नहीं जानता। भेद किसने जानना है ? मैंने जो समझा है वह कहता हूं कि प्रकृति के भेद का किसी को पता नहीं लगा। कितनी आकाश गंगा, कितने सूर्य और लोक-लोकान्तर हैं। क्या इनकी गिनती हो सकती है ? कौन ऐसा आदमी है जो यह कह सके कि मैं सारे संसार के हाल को जानता हूं। हम एक दूसरे के मन की दशा को नहीं जानते। किसी हद तक अनुमान लगाते हैं। वह कभी ठीक और कभी ग़लत होता है। फिर गुरुमुख कौन हुआ और वह भेद क्या है ? संसार का भेद तो मिलता नहीं लेकिन अपना भेद मिल जाता है कि मैं कौन हूं। मुझे अगर शान्ति, उत्साह, हिम्मत है या जो कुछ भी मेरे पास है यह अपने आपको जानने से है। मैं राम को मिलने निकला था। यही मंगलाचरण के शब्द में आया है :-

मंगलमय गुरु चरन, ताप त्रय हर लेने वाले।
भव दुख सकल मिटाय शान्त पद देने वाले॥

अगर मैंने संतमत से कुछ पाया है तो शान्ति पाई है। संसार तो संसार के पीछे फिरता है। जहां मैं जाता हूं कोई आदमी भी ऐसा नहीं होता जो संसार की इच्छा लेकर नहीं आता यह आदमी हैदरावाद से आया है इसे अपना कष्ट है, मेजर साहिब को अपना कष्ट है, किसी के बेटा नहीं, किसी का बेटा बीमार है, किसी के पास धन नहीं है, किसी की स्त्री तंग करती है और किसी का पति तंग करता है। इस संसार की यह दशा है। गुरु क्या देता है ? मैं यह नहीं कहता कि स्वामी जी लोगों को क्या दे गये या और गुरु क्या देते हैं और दाता दयाल क्या दे गये ? मुझे जो कुछ मिला और जो कुछ मैं दे सकता हूं वह मैं देता हूं। मगर जो कुछ मैं देना चाहता हूं उसे कोई लेना नहीं चाहता। लोगों को शान्ति की आवश्यकता नहीं है गुरु शान्ति देता है। लोगों को संसार के काम चाहिएं।

यह जो कुछ हमें तुम्हें संसार में मिलता है ये हमारे तुम्हारे अपने किये हुये कर्म हैं। मैं अढ़ाई महीने के बाद दौरे से वापिस आया हूं। यही कह कर आया हूं कि राम राम जपने से अपने कर्म

को ठीक करना हज़ारहा दर्जे अच्छा है अर्थात उलटी बात कह कर आया हूं। किसी ने आज दिन तक यह नहीं कहा। सब धर्म वाले कहते हैं कि खुदा को याद करो वह तुम्हारी रक्षा करेगा। मैं कहता हूं कि खुदा तुम्हारा रक्षक हो ही नहीं सकता। जब वह संतों का न हुआ जिन्होंने सारी आयु रब रब जपा। उन्हें क्या क्या कष्ट आये। इन बड़े बड़े गुरुओं महात्माओं के साथ क्या हुआ इतिहास को पढ़ो। यह समझ में नहीं आता कि हकीकत क्या हैं ? हकीकत यही है कि इन्सान अपने आपको जाने मैंने अपने आपको जानने का यत्न किया। जब तक तो राम को ढूंढने के लिए निकलता रहा तब तक मैं बेचैन रहा क्योंकि जब तक कोई इच्छा बाकी है तब तक वेचैनी है। जब तक हमारे अन्तर किसी चीज़ की चाह है तब तक हमें बेचैनी है। जब इच्छा नहीं रही तो कैसी बेचैनी ? मैं राम को मिलने निकला था, राम की इच्छा थी, सारा जीवन बेचैन रहा। तुम लोग भिखारी बन कर मांगने के लिए आते हो। लेकिन हम दानी बनकर जाते थे। तुम्हारे और हमारे में क्या अन्तर है ? लाखों कोस का

अन्तर है। लोग सत्गुरु के पास कुछ मांगने के लिए जाते हैं। हम मांगने के लिए नहीं जाते थे, हम तो प्रेम करने के लिए जाते थे या उस घर को देखना चाहते थे जो राधास्वामीमत कहता है। मैंने दो बार के सिवा कभी कुछ नहीं मांगा या मुझे शान्ति कहां से मिली ?

मंगल मय गुरु चरन, ताप त्रय हर लेने वाले।

दाता कहते हैं कि गुरु के चरण तीन तापों के हरने वाले हैं। मैं पूछता हूं कि कितने आदमी हैं जो मेरे पांव को धो धो कर पीते हैं या अपने गुरुओं के पांव धो धोकर पीते हैं, क्या इनके तीन ताप चले गये ? यह एक प्रश्न है। यहां कृष्णा बैठी हुई है। इसने बाबा साबन सिंह जी से नाम लिया था। इसने उनकी बहुत सेवा की। यह बाबा जगत सिंह के पास भी गई, बाबा चरण सिंह के पास भी गई और मेरे पास भी आती है। क्या इसे शान्ति मिल गई ? गुरु के ये चरण नहीं हैं, गुरु के चरण प्रकाश है। जो आदमी अपने अन्तर प्रकाश का साधन करता है उसके तीन ताप हरते हैं। तीन ताप

क्या हैं ? हर प्रकार के बोध भान, शारीरिक, मानसिक और आत्मिक अज्ञान के दुख। ईश्वर परमात्मा कहाँ है ? इस प्रकार की तलाश आत्मिक दुख कहलाती है। ये कब समाप्त होते हैं ? प्रकट रूप तुम देखो, जब तुम्हारा ओप्रेशन हुआ है, जब तुम गहरी नींद में चले जाते हो, तुम्हारा शरीर कटा हुआ है, क्या तुम्हें पता होता है ? नहीं। क्योंकि क्लोरोफार्म के प्रभाव से तुम शरीर से ऊपर चले जाते हो। वह शरीर का ताप कब हरता है ? जब तुम शरीर से अलग हो जाओ। यह नाम दान क्या है ? शरीर से अलग होने का नाम "नामदान है :-

तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा, सतनाम सतगुरु गत चिन्हा।

कई आदमी कहते हैं कि नाम "पांच नाम" हैं, कोई कहता है राधास्वामी नाम है, कोई कहता है ओंम तत सत नाम है। मैं कहता हूं, यह सब झूठ है। यह बच्चों के लिए है। जिस प्रकार बच्चों को स्कूल में पहाड़े पढ़ाये जाते हैं अगर उन्हें पहाड़े नहीं आते तो वे आगे नहीं जा सकते। जब तुम्हें गहरी नींद आ जाती है तो क्या तुम्हें तीन ताप रहते हैं ? मगर

वहां वेहोशी है। वेहोशी की दशा में तीन ताप तो चले जाते हैं मगर भान नहीं होता। इस वास्ते गुरु के चरण प्रकाश है। यही सनातन धर्म कहता है कि प्रकाश सावित्री का साधन करो जो आदमी सारा जीवन किसी गुरु के चेहरे का ही ध्यान करते रहते हैं वे तीन ताप से नहीं छूट सकते। गुरु का चेहरा गुरु के चरण नहीं है। राधास्वामी मत में हजूर महाराज राये सालिग राम साहिब ने साफ लिखा है कि गुरु के चरण प्रकाश है और गुरु शब्द स्वरूप है। बाहर के गुरु का कर्तव्य है कि जीव को शब्द और प्रकाश में लगादे। मेंने इतना समझा है। अगर किसी ने इस से अधिक समझा हो वह जानता होगा। मुझे पता नहीं। मेरा चार दिन का जीवन है। मैं हेराफेरी करके इसे बरबाद करके नहीं जाना चाहता। जो पिछले जन्म के कर्म हैं उनका दुख भोग लूंगा। अब चार दिन के जीवन के लिए क्या पाखण्ड जगाऊं। मैंने मर जाना है, क्या किसी ने मेरे साथ जाना है ? यह माई मेरे पीछे पड़ी रहती है। मेरी जान खाती है। इसे अपने ही अज्ञान का सहारा मिलता है। अगर मैं इस के घर का कुछ खा जाऊं

तो मैं मर गया मेरा तो कुछ नहीं रहेगा। मैं इतना समय बाहर लगा कर आया हूं, जो किसी के घर खाकर आया हूं उसके बदले अपनी और से रुपये मंदिर में दिये हैं। कई जगह किसी शक्ल में रुपये दे भी आया हूं। मेरी समझ में नहीं आता कि जो गुरु लोग चेलों से धन लेते हैं उनका क्या परिणाम होगा। मैंने परिणाम देखा भी है। दाता दयाल का परिणाम देखा यद्यपि उन्होंने स्वयं नहीं खाया मगर धाम उजड़ गई। वह अशांत रहे। तो मैं डर गया।

आपने कहा कि सत्संग सुनकर जायेंगे। आप जो मेरे पास आये हो क्या परमार्थ के लिए आये हो ? सब झूठ है, आप तो अपने संसारी सुखों के लिए आये हो वे तुम्हारे कर्म अनुसार मिलेंगें। जैसा तुमने किया हुआ है और जैसा तुम करोगे। क्योंकि विचार में शक्ति है इसलिए मैंने शिक्षा को बदल दिया। घरों में प्रेम रखो, मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखो आजकल हम खुदरौ संतान पैदा करते हैं वह खुदरौ संतान तुम्हारे लिए कैसे सुख का कारण बन सकती है। मुझे कोई आदमी तो बताये कि क्या वह केवल संतान पैदा करने के लिए स्त्री के पास

जाता है। वह तो अपने स्वाद के लिए जाता है जो लड़के स्वाद के पैदा हुये हैं, उनसे कैसे आशा कर सकते हो कि वे तुम्हारे सेवक या नियन्त्रण में रहेंगे जब हम स्वयं नियन्त्रण में नहीं रहे। मैंने भी ऐसी खुदरी संतान पैदा की थी मगर मालिक ने बड़ी दया की कि वो मरगई। मैं यह शिक्षा बदलना चाहता हूं। तुम लोग आये हो, अच्छी संतान पैदा करो और अगर तीन तापों से बचना चाहते हो तो अपने अन्तर प्रकाश का साधन करो। जब तक कोई आदमी प्रकाश का साधन नहीं करता, वह लाख किसी गुरु का ध्यान करे, उसमें ऋद्धी सिद्धि आ जायेगी, उसके काम पूरे हो जायेंगे, यह ठीक है मगर उसके त्रै ताप नहीं जा सकते। त्रै ताप क्या हैं? शारीरिक कष्ट, मानसिक ग़लत विचार और अज्ञान। ये तीन ताप हैं। यह दाता दयाल ने कहा है। वाणी रोचक है। अगर ऐसे ही कह देते जैसे मैंने कहा तो फिर गद्दी कौन बनाता इन गुरुओं की गद्दियें कैसे बनती, उन्हें धन कहां से आता उन्हें मत्थे कौन टेकता अगर वे सच्ची बात

बता देते । हज़ूर महाराज राय सालिग राम साहिब भी लिख गये कि गुरु के चरण प्रकाश है मगर पब्लिक में यह नहीं कहा । क्योंकि अगर ऐसा कह देते तो पब्लिक कैसे आये, धन कौन देगा और कौन मत्था टेकेगा । अगर आज गुरुपने में मत्था टेकना और पैसा न होता तो कोई गुरु बन जाता तो मुझे कहते । मेरे सहित हम सब स्वार्थी हैं । मैं अब बाहर गया था । क्या मैं किसी पर उपकार करने गया था । अपना कुछ कर्तव्य सच्चाई से पूरा कर आया हूं और मंदिर के लिए कुछ पैसे ले आया हूं । ये मेरे अपने ही खोटे कर्म थे जो मैंने कहा था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा । इसलिए सैंटर की आवश्यकता थी और दूसरे मैंने अपनी ग़लती से दाता दयाल का (Statue) बना लिया था, जिसके रखने के लिए जगह चाहिए थी । मैं भी फंसा हुआ हूं । मैं भी बरी नहीं हूं । मगर मैं बात को जानता हूं इस वास्ते दुख सहता हुआ भी सुखी रहता हूं । पन्द्रह दिन से बुखार आ रहा है, जुकाम है, गला भारी है मगर ऐसी दशा में भी जो मैंने कर्म किये हुये हैं उन्हें भुगतना है ।

मेंने वताया कि गुरु ऐसे तीन ताप हरते हैं। आप जो मेरे पावों को मत्था टेकते रहते हो या अपने गुरुओं के पांव को धो २ कर पीते हो, यह व्यर्थ है। तुम्हें एक कल्पित खुशी मिलेगी मगर तुम्हारे तीन ताप नहीं जा सकते। यह माई बहुत मत्थे टेकती है क्या यह सुखी है ? अपने दिल से पूछे किसी समय बहु से लड़ पड़ती है तो कहती है कि मैं चली जाती हूं। फिर तीन ताप कहां गये ?

भव सागर अति अगम पंथ नहीं सूझे कोई।

भवसागर अर्थात मन के अन्तर में विचार उठते हैं ये इतने शक्तिशाली हैं कि किसी को कोई दुख, किसी को कोई दुख तो किसी को कोई दुख। यह बात मेरी समझ में आई। मुझे अगर राधास्वामीमत की समझ आई है तो आप लोगों से आई है। आप इस आयु में मेरे सच्चे सतगुरु हैं। जब से मुझे पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर जो कुछ फुरता है यह मेरा अपना ही विचार है। अगर सच्ची नीयत है तो स्वप्न सच्चा हो जायेगा। अगर नीयत बुरी है तो बुरा स्वप्न आ जायेगा या बुरी बात हो जायेगी।

यद्यपि मैं अभी तक मंजल पर सदा के लिए नहीं ठहर सकता मगर मुझे मार्ग का पता लग गया है कि यह मार्ग है। लोग गुरुमत में शामिल हैं। मैं इस बार बाहर दौरे पर कह कर आया हूं कि इन गुरुओं ने हमें लूटा है। हम गुरुओं के आगे मत लुटो। अगर ये लड़कों को मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखना बताते तो कितने आदमियों के जीवन अच्छे हो जाते मैंने आपको एक दिन पहले उदाहरण दिया कि सरसोंहेड़ी में एक नौजवान लड़का आया। उसका बाप मर गया है मंदिर उसके बच्चों को मासिक मदद देता है। अब की बार भी सौ रुपये देकर आया हूं। वह बी-ए में पड़ता है। उसने मेरी कोई किताब पढ़ी और वह पागल हो गया। कहने लगा कि जो कुछ है बाबा फकीर है। ऐसी वैसी ऊंट पटांग बातें करने लगा। सब घर वाले दुखी हुये। मेरे पास आया तो कहने लगा कि तू अन्तरयामी है, तू ऐसा है, तू ऐसा है। मैंने लड़के को देख कर पूछा कि सच्च कहुं? उसने कहा कि सच्च कहें। मैंने कहा कि तू अपने हाथ से अपना ब्रह्मचर्य नहीं खोता? कहने लगा, खोता हूं। जो वह अपना

ब्रह्मचर्य छोटी आयु में खोता है वह उसके अन्तर कमी है । जब उसने मेरी किताब में कहीं उत्साह की बात पढ़ी तो उस कमी के कारण उसके अन्तर यह चीज़ महसूस हुई । मेजर साहिब मेरे पास आये हैं इनमें क्या कमी है ? इनका लड़का बीमार है । मैं भी Feel करता हूं । अगर मेरा लड़का बीमार हो तो क्या मैं Feel नहीं करूंगा ? मैं अवश्य Feel करता हूं । यह क्यों आये हैं ? इसलिए कि शायद बाबा कुछ करनी वाला हो तो मेरे लड़के को स्वस्थ करदे । स्वस्थ होना या न होना यह प्रालब्ध कर्मों के अनुसार है या मानव के अपने विश्वास अधीन है । इनका विश्वास इतना काम नहीं करेगा अगर लड़के का विश्वास नहीं है । लोग मुझ पर विश्वास करते हैं । मैं कुछ वह देता हूं तो पूरा हो जाता है । क्या मैं करता हूं ? उनका विश्वास काम करता है और कुछ प्रालब्ध ।

मैं तो इस समझ से तीन तापों से निकलता हूं । मगर अब भी फंस जाता हूं जब से गुरु के चरण पकड़े हैं तो निकल जाता हूं । गुरु के चरण प्रकाश है । इस लिए हमारे हिन्दुशास्त्र गायत्री का मन्त्र बताते हैं ।

तुम लाख बाबे फकीर, स्वामी जी या राम का ध्यान करते रहो तुम्हारा आवागवन नहीं जायेगा। तभी तो स्वामी जी ने कहा है :-

धर्मी भूले, ज्ञानी भूले ध्यानी भूले।

ऐसी ऐसी बाणियें सुनकर मैं रोया करता था कि मैं कहां फंस गया कि ध्यानी, ज्ञानी सब भूल गये क्या बात हुई ? अब मैं समझता हूं कि ठीक भूल गये क्योंकि तुम किसका ध्यान करते हो ? किसी आदमी का ध्यान करते हो न। जब तक तुम किसी आदमी से प्रेम रखोगे जब मरोगे तो तुम्हारा बज़न होगा, विज्ञान ने सिद्ध किया है। जब बज़न होगा तो लाख तुमने शब्द अभ्यास किया हुआ है अगर अन्त समय में तुम्हारा प्रेम किसी भी स्थूल वस्तु से होगा तो तुम्हें *Gravity of ecuth* ऊपर नहीं जाने देगी यह मेरी *Reading* है। मैं कोई दावा नहीं करता। दाता दयाल ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना, मैंने जो स्वयं अनुभव किया वह कहता हूं।

त्रै ताप हरने वाले कौन ? गुरु। उन्होंने क्या किया ? उन्होंने मुझे नाम दिया। मेरी समझ में नहीं आता था कि नाम क्या है। मैं तो उनको ही

जफ्फा मारे बैठा था। यही समझता था कि लाहौर या धाम से जो कुछ करते हैं वही करते है। अब आंख खुली तो पता लगा कि वह कुछ नहीं करते थे। उन्होंने तो मुझे ज्ञान बताने का एक तरीका बताया था। केवल मेरा या किसी गुरु का ही ध्यान करने से तुम्हें सिद्धि शक्ति मिल जायेगी, संसारी काम बन जायेंगे मगर आवागवन से बिल्कुल बचाओ नहीं हो सकता और यही बाबा सावन सिंह जी महाराज फरमाया करते थे कि जिनको हरिद्वार से प्रेम है वे हरिद्वार की मच्छलियां बनेंगे। अब जिन्हें जहां से प्रेम है वे मरकर वहीं जायेंगे। असूल तो एक ही है। यही हजूर महाराज राय सालिग राम साहिब ने भी कहा है कि अन्त समय फिल्म चलती है, गुरु भी आ जाता है जिससे नाम लिया हुआ है। वह बाहर का गुरु नहीं आता सब पाखण्ड का जाल है। जिन गुरुओं ने ऐसा कहा उन्होंने हमें मूर्ख बनाकर लूटा है। मेरे सामने सब गुरुओं ने माना है कि वे कहीं नहीं जाते। लोग मर जाते हैं। उनके अन्तर अपने अपने गुरुओं का रूप प्रकट होता है। और वह रूप उन्हें ले जाता है मगर इन गुरुओं को कोई

पता नहीं होता। मेरे सामने सबने माना मगर यह बात पब्लिक को नहीं कहते। क्योंकि अगर यह बात पब्लिक को कहदें तो डेरा कौन बनाये, धन कहां से आयेगा।

भव दुख सकल मिटाये, शान्ति पद देने वाले।

मुझे कहां शान्ति मिली ? मुझे पता नहीं कि दाता दयाल का क्या भाव है। गुरु कैसे शान्ति देते हैं ? मैं नहीं जानता मैं फूंक नहीं मार सकता। मुझे तो तुम लोगों ने शान्ति दी। आप मेरे गुरु हैं। जब आप लोगों से सुना कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है, मरते समय ले जाता है, स्कूल में पर्चे हल करवा देता है, बीमारों को दवाई बता देता है और मैं नहीं होता तो मैं इस बात को मानने के लिए विवश हो गया कि जो कुछ मेरे अन्तर पैदा होता है यह मन काल है। अब इसे छोड़ जाता हूं तो आगे प्रकाश और शब्द रह जाता है। फिर उस चीज़ की तलाश करता हूं। जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। दो तीन महीने के वाद कभी किसी समय कोई Chance हो जाता है जब प्रकाश और शब्द को छोड़कर अशब्द गति में

चला जाता हूं। वहां न मैं, न तू, न गुरु न राम, न कृष्ण है अर्थात वहां कोई चीज़ नहीं। मैं उसे नफी नहीं कह सकता। कुछ है, मगर अपनी होश नहीं। फिर मैं क्या हुआ? क्या मैं कुछ बन गया? अगर कुछ बन गया होता तो अपनी खांसी और ज़ुकाम को ठीक कर लेता। मुझसे लोग नोट पर दस्तखत करवा लेते हैं, वे कहते हैं बाबा! हम बड़े अमीर हो गये। अगर मेरे ही वश में होता तो मैं भी अमीर हो जाता यह सब तुम्हारा विश्वास काम करता हैं।

घरों में शान्ति रखो। तुम्हारे विचार में बड़ी शक्ति है। जो कुछ तुम चाहते हो उसकी प्रबल इच्छा रखो।

हिम्मत से काम लो, संसार में उन्नति कर जाओगे। वह भी किसी सीमा तक! आखिर उन्नति की भी कोई सीमा होती है। मेरी दाड़ी के बाल हैं जितने मैंने काटे हैं अगर इन सबको इकट्ठा किया जाये तो यहां से वहां तक कितने लम्बे बाल हो जायेंगे। मगर यूं अगर मैं दाढ़ी को न भी कटाऊं तो एक हद से अधिक तो नहीं जायेगी, कोई पांव पर

तो आकर नहीं पड़ेगी । आप लोग आये हैं। I want to remain true to my conscience मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि जिस इच्छा को लेकर तुम या मेजर साहिब आये हैं वह पूर्ण हो। अगर आप लोगों के विचार में शक्ति है तो मेरे विचार में भी शक्ति है। जब लोग अपने विचार से मुझे बना कर काम ले लेते हैं तो इससे सिद्ध हुआ कि मानव के दिल में शक्ति है। जो विश्वास करते हैं उनके काम हो जाते हैं। जो विश्वास नहीं करते उनके काम नहीं होते। मगर अगर मैं तुम लोगों के घरों का खा जाऊं तो तुम्हारे जितने अवगुण हैं सब मुझे लेने पड़ेंगे। इस वास्ते कहा जाता है कि जो सच्चा प्रेमी हो चाहे अज्ञानी हो उसका संत निरादर नहीं करते। राम चन्द्र जी ने भीलनी के जूठे बेर खाये थे क्योंकि उस भीलनी में एक सच्चाई थी। उसके बेरों मैं अमृत था वह रामचन्द्र जी को अमर कर गया। लक्षमण ने पिछली ओर फेंक दिये थे। इस वास्ते प्रेम एक और चीज़ है मगर सब आदमी प्रेम के लिए चीज़ नहीं देते। संसार तो अपने स्वार्थ के लिए देता है। प्रम में किसी प्रकार की इच्छा नहीं

प्रेम मांगता नहीं है । मां बच्चे के लिए कितना कष्ट उठाती है यद्यपि बाद में शायद इच्छा हो कि बड़ा होकर मेरी सेवा करेगा । वह कितना परिश्रम करती है । मैं आप सब से निष्काम प्रेम करता हूं । संसार का व्यवहार है । व्यवहार के रिस्ते से व्यवहार के साथ बोलता हूं ।

मैंने तो यह समझ लिया कि मैं कौन हूं । मैं एक चैतन का बुलबुला हूं । वह मालिक बेअन्त है । उसका तो मुझे अन्त नहीं मिला । शायद कबीर साहिब, नानक साहिब या दाता दयाल को मिला हो । कहने को तो सब कह गये कि उसकी लीला अपरमपार है मगर किसी ने जाना नहीं । आप आ जाते हैं । आपको क्या उपदेश करूं अपने आप को समझाता रहता हूं कि फकीर चन्द ! शुद्ध व्यवहार करो, नहीं तो पता नहीं कि कहां कुएं में जाकर पड़ेगा अगर मैं आज अहंकार में आ जाऊं और अपने आपको गुरु मानकर अकड़ कर बैठ जाऊं तो मेरी क्या दशा होगी पता नहीं । गुरु नाम ज्ञान, समझ और विवेक का है । यहां तक मैं सहमत हूं । यही सत्संग की महिमा है ।

बिन सतसंग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई॥

आप लोग प्रकाश का ध्यान किया करो। अगर प्रकाश का ध्यान नहीं कर सकते तो जिस रूप में तुम उसे मानते हो उसे मत समझो कि वह फकीर चन्द है, मस्तराम का लड़का और होशियारपुर में रहता है या कोई और गुरु है, वह अमुक स्थान पर पैदा हुआ है। उसके इतने बच्चे, ज़मीन और सम्पति थी। अगर ऐसा समझोगे तो तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। हां! उस रूप को जो तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है अगर तुम उसे पूरा समझ लोगे तो तुम्हारा बेड़ा पार हो सकता है। जिस प्रकार एक स्त्री का लड़का जब उसे मिलता है तो उसका और भाव होता है, जब उसका भाई मिलता है तो उसका और भाव होता है। स्त्री वही है, जब पति मिलता है तो और भाव होता है जब उसका यार उसे मिलता है तो और भाव होता है। जो कुछ भी है तुम्हारे अपने प्रेम के ऊपर है।

जा की रही भावना जैसी हरी मूरत देखी तिन तैसी।

मैंने यह समझा है। शायद दाता! मैं भूला हुआ हूं। पता नहीं मैं सच्च कहता हूं या झूठ कहता हूं। अगर आप आज्ञा न देते कि शिक्षा को बदल जाना तो मैं कुछ न कहता। आपकी दया और सत्संगियों की दया से जो कुछ मैंने अनुभव किया है, वह मैं कहता हूं। मुझे कोई दावा नहीं। मेरी समझ में यह आया है। अगर दूसरों को लिखने का अधिकार था तो मुझे भी अधिकार है। उन्होंने दावा किया, मैं कोई दावा नहीं करता। मेरी समझ में यह आया है, शायद में ग़लत हूं। मेरे लिए तसल्ली है। मैं कई बार अकेला बैठता हूं या जब बाणियें सुनता हूं तो मेरा हृदय घबरा जाता है। फिर जब अपना अनुभव मेरे सामने आता है तब हृदय ठन्डा होता हैं। अगर मैं यह सच्ची बात आप लोगों को नहीं बताता और लोगों से मत्थे टिकवाता हूं, धन लेता हूं तो मैं कहां जाऊंगा। केवल एक ही बात है कि मैं किसी को धोखा देकर नहीं लेता। मैं साफ कह देता हूं जिसकी इच्छा है दे जिसकी इच्छा नहीं है वह न दे। मैं तो अपने कर्म का चक्कर काटता हूं।

भव सागर अति अगम पन्थ, नहीं सूझे कोई।
शब्द जहाज़ चढ़ाय, पार गुरु कीन्हा सोई॥

मैं यह प्रश्न अपनी आत्मा से करता हूं कि क्या शब्द जहाज़ के बिना आदमी पार नहीं जा सकता ? कोई दावा नहीं। तन सुमरिन से स्थिर हो जाता है, मन नाम और अजपाजाप से स्थिर हो जाता है, रूह ध्यान से स्थिर हो जाती है सुरत प्रकाश और शब्द से स्थिर हो जाती है। जब वह स्थिर हो जायेगी तो उसे पता लगेगा कि मैं कौन हूं। यह अभ्यास इसी लिए कराया जाता है कि आदमी को पता लग जाये कि मैं कौन हूं। जब तुम शरीर में होते हो, डाक्टरों ने तुम्हें क्लोरोफार्म दिया है, तुम्हारा शरीर कट रहा है, लेकिन तुम्हें पता नहीं होता तो क्या यह प्रमाण नहीं है कि आप शरीर नहीं है। यह प्रमाण है कि आप शरीर नहीं हैं। ऐसे हीं ध्यान है। जब आदमी ध्यान में लीन हो जाता है तो मन जो विचार उठाता था वे बन्द हो जाते हैं मगर तुम रहते हो। इसका क्या भाव ? इस का भाव यह है कि जो विचार मन के अन्तर निकलते हैं वह तुम नहीं हो। तुम कुछ

और चीज़ हो। इसका अभ्यास से पता लगता है। अगर मैं ज़वानी समझा भी दूं तो जबतक आप साधन करके अनुभव न करोगे, आपको शान्ति नहीं मिलेगी। आगे मैं प्रकाश को देखता हूं। जो चीज़ प्रकाश को देखती है उसकी तलाश करता हूं। जब कभी दूसरे तीसरे महीने ऐसी समाधि लगती है तो पता लगता है कि मैं न प्रकाश हूं और न ही शब्द हूं, न मन हूं और न शरीर हूं। मैं ऐसी चीज़ हूं जो सबको देखती और सब में रहती हुई सब की साक्षी है उसे सन्त सुरत कहते हैं। सन्त तो शायद कह गये कि वह अनामी, अलख. अगम या अपार है। मैं नहीं कहता। अगर कोई सन्त वह बन गया है तो कुछ करके दिखाये। वह तो आधार है। देश में कितनी विपत्ति और बीमारी है, कोई उसे टाल दे। पलटु जैसे संत ऐसा कह गये :-

साधो भाई हम वहां के बासी जहां पहुंचे नहीं अविनाशी।

उन्होंने कहा कि जो काम संत कर सकता है वह ईश्वर परमेश्वर नहीं कर सकता। उसी पलटु साहिब को दूसरे साधुओं ने जीवित उठाकर उबलते हुये तेल के कढ़ाहे में डालकर फूंक दिया तो उसका

वह ज्ञान कहां गया ? इस वास्ते मैं पिछले सन्तों के साथ सहमत नहीं हूं यद्यपि वह जेठ महीने में इशारा कर गये ।

जेठ महीना जेठा भारी,
जीवन हिरदे तपन करारी ।
संत दयाल जीव हितकारी,
नहिं खालिक मखलूक न खिलकत ।
कारन कारज नहीं वहां दिक्कत,
राम रहीम करीम न केशो ।

वह वही दशा है । मैंने क्या समझा कि मैं कौन हूं ? मैं चैतन का एक बुलबुला हूं । मुझे तो उस प्रकृति के खेल का पता नहीं लगा । मैंने सारी आयु खोदी मैं उस खेल को नहीं जान सका । शरणागत के सिवाय मेरे पास कुछ शेष नहीं है । वह जों एक तत्व, अकाल पुरुष *Vame less* है अपने आपको उसके सपुर्द करता रहता हूं । जब कभी मन में आता हूं तो दाता दयाल के रूप को "वह" समझकर शरणागत होता हूं, कभी प्रकाश और कभी शब्द समझ कर शरणागत होता हूं । मेरे जीवन का परिणाम क्या होगा, मैं कैसे मरूंगा,

कहां जाऊंगा मुझे स्वयं पता नहीं है। यह इच्छा अवश्य है कि दाता मुझे शक्ति दे जब मैं मरूं तो संसार को बता सकूं कि मेरा क्या परिणाम हुआ। मैं इस समय तक यहां तक पहुंचा हूं। मैं गुरु के चरणों की महिमा क्यों मानता हूं कि उनके कारण मुझे शान्ति मिली है :-

बूढ़त रहे मंझधार, मिला नहीं कोई सहाई।
आये गुरु दातार, बांह गह मेरी ठौर लगाई।

मैं अशान्त था। मेरा भाग्य मुझे दाता के चरणों में ले गया था। उन्होंने सारा जीवन छाती से लगाया। जिस प्रकार छोटा बच्चा ऐसी बात कह देता है जो कहने वाली नहीं होती मगर मां बाप उसकी बात को सुनकर हंसते हैं। ऐसे ही मैं भी मूर्ख था। दाता मेरी बातों को सुनकर हंसा करते थे मगर आखिर में उन्होंने मुझे यह काम दिया था और कहा था कि तुझ को सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। आप मेरे सच्चे सत्गुरु हैं। अब दाता दयाल तो हैं नहीं, मैं किसकी सेवा करूं। जितनी बुद्धि है उतनी आप लोगों की सेवा करता रहता हूं।

नाम रूप का भेद दिया, भरम भेद मिटाया।
पद अभेद दरसाय, भेद का फंद छुड़ाया।

भेद का भाव *Secret* है। बहुत भेद समझा। जब भेद समाप्त हो गया कि मैं कौन हूं शब्द पैदा होता है और उसमें चैतनता आती है "मैं" बन जाती है। "मेरी मैं" मैं, मैं, मैं, करती रहती है। बनारस वालो! तुम आये हो। मेरे पास शुभ भावना के सिवाय और कुछ नहीं है। मैं Good Wishes देता हूं। मेजर साहिब! आप आये हैं। सच्चे दिल से चाहता हूं कि तुम्हारा लड़का स्वस्थ हो जाये। मैं जानता हूं कि अगर मेरा लड़का बीमार पड़ जाये तो क्या मुझे दुख नहीं होता? होता है, सबको होता है, हैदरावाद वालो, तुम्हारे कष्ट दूर हो जायें और मैं क्या कर सकता हूं।

सब को राधास्वामी!

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर।

दिनांक 5 अप्रैल 1974

आके चरणों में पड़ा हूं, तेरे सबको त्याग कर।
ली शरन पद कमल की, सम्बन्धियों से भागकर।
कष्ट पाया दुख उठाया, मोह से व्याकुल हुआ।
छोड़ी आलस नींद की, निद्रा से भव के जागकर।
अब नहीं जाता कहीं, जाने लगा क्यों किस जगह।
बात आई अब समझ में, प्रेम और अनुराग कर।
एक का हो रहना अच्छा, बहुमता है दुर्गता।
एक मता है सदगता, यह सोचा भाग और त्यागकर।
घूमा भरमा खालिए चक्कर, बगुले के समान।
अब तो चित निश्चल हुआ है, प्रेम का वर मांगकर।
कट गई अज्ञान की जड़, आया जब सत्संग में।
राग उपजा सत का, सत्संग में गुरु के लागकर।
राधास्वामी मौज की आई समझ, सुनकर बचन।
शब्द का श्रवण हुआ, भक्ति के रस में पागकर।

राधास्वामी । दो दिन पहले सायंकाल को जैनमत के दो आदमी मेरे मकान पर आये और महावीर जयन्ति के उत्सव पर आने के लिए मुझे निवेद दिया। मैंने इन्कार कर दिया। क्यों ? मैं धर्मों, पंथों और मतों के झगड़ों में नहीं पड़ता। मुझे जीवन में किसी चीज की तलाश थी। मौज़ हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने बहुत दया की और अपने अन्तर में धसने और दिल की किताब पढ़ने का विचार दिया। जैनमत के आदमियों को मैंने जब इन्कार किया तो उन्होंने बताया कि हमने मुनि सुशील कुमार जी को इस उत्सव में शामिल होने का निमन्त्रण दिया था लेकिन उन्होंने लिखा है कि मैं नहीं आ सकता आप पण्डित फकीर चन्द जी को बुला लेवें। जो कुछ मैंने कहना है वह भी वही कहेंगे इसलिए हम आपके पास आये हैं लेकिन मैंने अशक्ति प्रकट की।

मुनि सुशील कुमार जी से मेरा बहुत प्रेम है। क्यों ?

कुन्द हम जिन्स बाहमजिन्स परवाज़।
कबूतर वाकबूतर वाज़ वा वाज़।

मैं इन्कार न करता लेकिन मैंने सोचा कि फकीर! तुम को क्या हक्क (अधिकार) है कि तुम स्वामी महावीर के बारे कुछ कहो? मैंने अपना जीवन सच्चाई की तलाश में व्यतीत किया है। मेरी समझ में यह आया कि संसार में Demand & Supply का सिद्धान्त काम करता है। जब किसी जगह कोई दुर्घटना होती है तो कोई तो वहां मरे हुए आदमियों की जेबें खाली करते हैं उनकी घड़ियां उतारते हैं और समान उठाके ले जाते हैं और कोई घायलों के घावों पर पटिट्यां बांधते हैं, उनको दूध पिलाते हैं और रोटी खिलाते हैं और कोई उस दुर्घटना के होने का कारण तलाश करते हैं ताकि दोवारा ऐसा न होने पाये। ऐसे ही जब संसारी दुर्घटनायें होती हैं अर्थात संसार में (प्रतिकूल) प्रस्थितियां पैदा हो जाती हैं तो प्रकृति ऐसी हस्तियें पैदा कर देती है जो यह सोचती हैं कि ऐसी बातें दोवारा न हों और उस समय की प्रस्थितियों को ठीक करने का यत्न करती हैं। महावीर स्वामी ऐसे समय पर इस संसार में आये जब देवताओं के नाम पर मानव जाति का वध होता था। इससे उनके दिल को ठेस लगी। उन्होंने

बारह साल तक तप किया। उनके अन्तर प्रकाश हुआ फिर उनको ज्ञान और अनुभव हुआ। मेरे अनुभव में यह बात आई है कि जब किसी वस्तु की प्रबल इच्छा होती है या जिस इच्छा को लेकर कोई आदमी जप तप या साधन अभ्यास करता है उसके अनुसार जब उसके अन्तर प्रकाश होता है और उस प्रकाश के बाद जो ज्ञान और अनुभव उसको होता है वह उसकी उस वासना की पूर्ती का इलाज होता है। हर एक आदमी को उसके तप का फल मिलता है। रोशनी या प्रकाश का वर्णन सब धर्मों में है। जो आदमी निवृति के लिए तपस्या करते है उनका अनुभव और होता है और जो किसी दूसरी चीज़ के लिए तपस्या करते हैं उनका अनुभव और होता है। बात बहुत सूक्ष्म है मगर यह है बिलकुल ठीक। ध्रू भक्त ने तप किया और विष्णु जी प्रकट हुए, क्योंकि ध्रू के अन्तर में सुतीली मां का दुर्व्यवहार और राजगद्दी से हटाए जाने का विचार था इसलिए वह इस ज्ञान के बाद फिर राजा बना। यही दशा मेरी हुई। मैं बचपन से ही मालिक को मिलना चाहता था और यह जानना चाहता था कि मेरा आदं क्या है

और कहां है। मेरे साधन, भक्ति और प्रेम का यह परिणाम हुआ कि मुझे असली मालिक का पता लग गया कि वह क्या है ? उसका मुझे अनुभव हो गया। क्योंकि मेरे जिम्मे जगत कल्याण का कर्त्तव्य था इसलिए 1947 में जब देश आज़ाद हुआ और पाकस्तान बना तो उस रात को मुझे प्रकाश के बाद इन सारे दुखों के इलाज का यह अनुभव हुआ कि इस समय संसार में मानवता की आवश्यकता है और मैंने इन्सान बनो' की आवाज उठाई। अब हर एक धर्म के आदमी अपने अपने पूर्वजों की शिक्षा को उनका नाम लेते हुये यह सिद्ध करने का यत्न करते हैं कि उनकी शिक्षा का मिशन भी इन्सान बनाना था।

ऐसे ही महावीर जी भी उस समय पैदा हुये जब हिन्दु लोग यज्ञ किया करते थे और जानवरों को मारा करते थे। यज्ञों में गोमेध यज्ञ का भी वर्णन आता है। अब मेरे दिल में यह प्रश्न पैदा होता है कि ये यज्ञ जो वे लोग करते थे क्या ये ग़लत हैं ? यज्ञ का भाव ग़लत नहीं मगर उनका तरीका

ग़लत था। उन्होंने यज्ञ की असलियत को नहीं समझा और वे असली यज्ञ को छोड़कर जानवरों को मारने लग गये। अजबली यज्ञ में बकरे को मारने से या गोमेघ यज्ञ में गाय को मारने से या किसी यज्ञ में आदमी को मारने से यज्ञ का अभिप्राय पूरा नहीं होता। बकरा क्या है ? हमारा मन। बकरा मैं मैं करता रहता है ऐसे ही हमारे मन में भी 'मैं' भरी पड़ी है। हम अपने स्वार्थ के लिए सब कुछ करते हैं। इस स्वार्थ के भाव को समाप्त कर देना ही अजबली यज्ञ है और यह भाव तब होगा जब सुरत प्रकाश में जायेगी क्योंकि मन तब पैदा होता है जब प्रकाश शरीर में आता है। इसलिए असली यज्ञ तो था अपने स्वार्थ को मार देना। इस इच्छा को मन में रखकर साधन करना कि मेरे विकार दूर हो जायें और अन्तर में प्रकाश या सावित्री प्रकट हो जाये तो उसमें अपने बुरे भावों को लय कर देना ही यज्ञ है। ऐसे ही अश्वमेध यज्ञ है अश्व नाम है। घोड़े का यह महा चंचल है। अपने चंचल जज़बात को अपने अन्तर प्रकाश में आहुति देकर समाप्त कर देने का नाम अश्वमेध यज्ञ है।

रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण तीन डाकू हैं जो हमारी सुरत को सदा अपनी ओर खींचते रहते हैं। रजोगुण और तमोगुण तो हमको नष्ट कर देते हैं लेकिन सतोगुण भी है तो डाकू, मगर किसी हद तक हमारी सुरत की सहायता करता है। यह है गोमेध यज्ञ। संसार यह समझता है कि नरमेध यज्ञ में आदमी की बली दी जाये और आदमी भी वह हो जिसका कोई अंगहीन न हो। देखो! जिस आदमी के रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण के भाव समाप्त हो जाते हैं। उसमें पूर्णता आ जाती है। तीन यज्ञ तो मैंने कर लिए मगर चौथा यज्ञ जो नरमेध यज्ञ है, वह मुझसे अभी तक नहीं हो सका मगर मैं यत्न करता रहता हूं। नरमेध यज्ञ क्या है? अपना अनुभव कहता हूं और वह है हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के निम्नलिखित शब्द से प्रकट होता है।

न अपना नाम रखना तुम, न दुनियां में निशां रखना।
नहीं की जब गई आदत, ज़बां पर फिर न हां रखना।
मुकर होना अबस है और मुनकर होना है ग़लती।
न सिर में ऐसे सौदा का कभी बारे गिरां रखना।
न साहिब दिल न बेदिल, बनने की तुममें हबस आये।

न दिल देना न दिल लेना, न बहरे दिलस्तां रखना।
अगर है तर्क तर्क करदो, तर्क का भी तर्क बेगुमां।
मकां जब छुट गया फिर, क्यों खयाले लामकां रखना
खामोशी मानये दारद; कि दर गुफ्तन नमी आयद।
न सच और झूठ कहने, के लिए मुंह में जुबां रखना।

जब इन्सान की सुरत को ऊपर जाने के बाद यह ज्ञान हो जाता है कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं तो अपने अन्तर में अपने आपका निश्चय हो जाता है और वह इस ज्ञान में दृढ़ रहता है, इसका नाम है नरमेध यज्ञ। क्योंकि उस समय लोग असली यज्ञ को तो भूल गये और जानवरों को मारने लग गए तो उस समय महावीर स्वामी के दिल को ठेस लगी और उन्होंने तप किया उसके बाद उनको जो ज्ञान हुआ उसके अनुसार उन्होंने अहिंसा परमोधर्म का प्रचार किया। जैनमत और बुद्धमत का सबसे बड़ा सिद्धान्त अहिंसा परमोधर्मः है। उस समय उन्होंने जो कुछ किया वह उस समय के लिए ठीक था। क्योंकि वह राजा थे इसलिए उनकी आवाज सुनी गई। जो आदमी दूनियां में जितनी ज्यादा कुरबानी करता है उसकी उतनी ही अधिक मानप्रतिष्ठा होती

है और जो कुरबानी नहीं कर सकता उसकी मान प्रतिष्ठा नहीं है। यह सिद्धान्त है। मेरा अपना अनुभव यह है कि संसार में ऐसे भी कई आदमी हुए होंगे या होंगे जो गौतमबुद्ध या दूसरे महात्माओ से भी अधिक पवित्र आत्मा होंगे मगर क्योंकि उन्होंने संसार में प्रकट रूप में कोई कुरबानी नहीं की इसलिए उनका संसार में नाम नहीं। मैंने वह समय भी देखा है जब महात्मा गान्धी के समय में अमीर लोग खद्दर पहनते थे और उनका बहुत मान होता था। क्योंकि उनके पास सब कुछ काफी होते हुये भी महात्मा गांधी के कहने अनुसार वे खद्दर पहनते थे लेकिन मैंने गांवों में ऐसे लोग भी देखे हैं जिन्होंने सारी आयु खद्दर पहना मगर उनका खद्दर पहनने के नाते वह मान नहीं था जो खद्दर पहने हुए धनी लोगों का था। क्यों ? क्योंकि उनके पास ऐसे साधन नहीं थे कि वे कीमती कपड़े को खरीद कर पहन सकें, इसलिए यह उनकी कुरबानी नहीं थी। अमीरों के पास सारा सामान मौजूद था और फिर भी उन्होंने कीमती और विदेशी कपड़े को छोड़कर देसी खद्दर पहना। इसलिए उनकी इस कुरबानी के

कारण उनका मान था और वे प्रसिद्ध हो गये। क्योंकि महावीर स्वामी राजा थे और तप के कारण उनकी वाणी में बल था और उन्होंने कुरबानी की, इसलिए उनका मान हुआ।

महावीर स्वामी ने "अहिंसा परमोधर्मः" का सिद्धान्त चलाया। अब मेरे दिल में प्रश्न पैदा होता है कि क्या यह सिद्धान्त ठीक है? मेरी आत्मा नहीं मानती कि मैं इसकी पुष्टि करूं। हां! उस समय के लिए जब अज्ञान के कारण लोग जानवरों को मारते थे यह ठीक हो सकता है मगर एक सिद्धान्त सदा के लिए ठीक नहीं होता। अपना अपना विचार है। महात्मा गांधी अहिंसा के पुजारी थे। वह कहा करते थे कि पुलीस और फौज की कोई अवश्यकता नहीं है। लेकिन आप सोचो कि इनके बिना देश की क्या दशा होगी। अब अगर खेतों में कीड़े मारने वाली दवाई न फैंकी जाये तो कितनी नष्ट हो जायेगी और मानव जाति भूख से मर जायेगी। इस संसार में हिंसा और अहिंसा दोनों काम करते हैं। सन्तों ने इस देश को काल और माया का देश कहा है। अहिंसा परमोधर्मः प्रकृति का धर्म नहीं है बल्कि यह

ता मानव को शान्ति देने और मानव के कल्याण के लिए है मगर किसी उचित सीमा तक। अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी का दिल न दुखाना अहिंसा परमधर्मः है। रह गया कीड़ों को मारना यह तो स्वाभाविक ही वर्षा और गरमी सरदी के कारण लाखों पैदा होते हैं और लाखों ही मरते हैं। अहिंसा परमोधर्मः का सिद्धान्त सारी दुनियां के लिए ठीक नहीं है और न ही हो सकता है। अगर फसलों पर Spray नहीं करोगे तो रोटी कहां से खाओगे। इस लिए यह जैनमत का अहिंसा परमोधर्माः एक टेक है और पक्ष है और यह केवल विशेष विशेष आदमिमों के लिए है। हमारे हर एक स्वांस के साथ हमारे अन्तर कीड़े जाते हैं जो दिखाई नहीं देते। इसलिए यह क्रियात्मिक जीवन में नहीं आ सकता। अमली जीवन अहिंसा परमोधर्माः यह है कि आदमी किसी का दिल न दुखाये, अपने स्वाद के लिए किसी जीव को न मारे और अपने सुख के लिए दूसरे को दुखी न करे। हमारे अन्तर में करोड़ों कीड़े Germs हैं। ये नाना प्रकार की बीमारियों के कारण हैं। हम दवाई खाकर इनको मारते हैं अगर इनको मारने का प्रबन्ध

न करें तो हम स्वस्थ नहीं रह सकते। हिंसा और अहिंसा प्रकृति की जान है। मानव का अहिंसा परमोधर्मः कुछ और चीज़ है। मैं स्वयं अहिंसा परमोधर्मः का अनुआई हूं। महात्मा गांधी अहिंसा के अनुयाई थे मगर एक बार गाय के एक बछड़े को बहुत कष्ट में देखा। उसकी जान नहीं निकलती थी तो उसको गोली से मरवा दिया। हमारा देश रक्षा के लिये अगर सेना नहीं रखता कि हम अहिंसा के अनुयाई हैं तो शत्रु आके हम को मार देगा, देश को लूटेगा और हमको गुलाम बनायेगा। हम लोग शिक्षा की रूह को नहीं समझते। अगर देश के अन्तर प्रवन्ध के लिए आवश्यकता के समय पुलीस गोली न चलाये तो देश की क्या दशा हो। हम लोग टेकी हो जाते हैं लेकिन हर एक शिक्षा किसी विशेष दशा अनुसार होती है। एक ही शिक्षा सदा लाभदायक नहीं होती। Non Cooperation असयोग और (Civil Disobedience) सभ्य अवज्ञा महात्मा गांधी के समय पर ठीक थी मगर अब इस असूल पर चलने से देश को हानि होगी। इस समय मरणव्रत रखे जा रहे हैं। देश में अशान्ति है।

मैं समय के सन्त सत्गुरु के रूप में अहिंसा परमोंधर्मः वालों को सतज्ञान दिए जा रहा हूं, कोई माने या न माने और समझे या न समझे उनकी इच्छा। अहिंसा परमोंधर्मः अपने मन बचन कर्म तक सीमित होना चाहिए अर्थात तुम्हारे मन बचन और कर्म से किसी की हानि न हो मगर इस समय क्या हो रहा है ? पति पत्नि, भाई भाई और बाप बेटा अपने कटु बचनों से एक दूसरे का दिल [illegible] । यह नहीं होना चाहिए। यह है अहिंसा परमोधर्मः, जिसकी इस समय अवश्यकता है। मांस खाना ठीक नहीं है और न ही यह इन्सान का भोजन है मगर कई ऐसे भी देश हैं जहां खुराक की कमी और जलवायु अनुसार मच्छलियां और मांस खाना पड़ता है। अगर न खायें तो भूखे मर जायें। इसलिए संसार में हिंसा और अहिंसा दोनों ही हैं इसलिए संत कहते हैं कि आदमी को चाहिए कि वह किसी का दिल न दुखाए। मन, बचन और कर्म से शुद्ध रहे और इस काल और माया की दुनियां के चक्कर से निकलने का यत्न करे। इस समय मानवता की आवश्यकता है। जैनमत वाले कहते हैं कि देश में

शान्ति लाने के लिए महावीर स्वामी जी की शिक्षा है मगर अगर वे यह कहें कि किसी जीव को या जानवर को मारा न जाये तो यह अमली जीवन में सम्भव नहीं है।

मैं उनके सम्मेलन में इसलिए नहीं जाना चाहता था कि मैंने अपने विचार अनुसार बोलना है मैं अपने हृदय के विरुद्ध नहीं बोल सकता मगर दूसरों के पास जाकर उनके अनुसार बात कहनी पड़ती है चाहे वह ग़लत हो या ठीक हो। यह दुनियां है। सन्त कहते हैं कि अपनी आत्मा को बचाओ दुनियां तो ऐसे ही चलती रहेगी। संसार में तो जीवन और मौत, हिंसा और अहिंसा, नेकनामी और बदनामी, और लाभ हानि चलते ही रहते हैं किसी ने इन को वश में नहीं किया। प्रकृति समय अनुसार महापुरुषों को पैदा कर देती है और वे समय अनुसार इलाज़ कर जाते हैं। पिछले असूल इस समय काम नहीं देते। इस समय मन बचन और कर्म से शुद्ध रहने से शान्ति मिलेगी अहिंसा क्या है ? अगर दस बीस हज़ार आदमियों को मार दिया जाये शर्त यह कि

और कोई उपाय ठीक सिद्ध न हो तो मैं समझता हूं कि यह पुन्य है। अगर देश पर शत्रु हमला कर देता है लेकिन तुम अहिंसा के पुजारी हो तो उस समय देश की क्या दशा होगी ? यह कहां की अहिंसा है ? अगर देश के भीतर गड़बड़ है तो उस समय शक्ति का प्रयोग करना भी सरकार के लिए अवश्य हो जाता है। क्या उस समय अहिंसा काम देगा ? इसलिए हर एक जगह यह शिक्षा काम नहीं देती। यही कारण है कि सन्त पिछले गुरुओं के सिद्धान्तों और उन की शिक्षा के साथ शतप्रतिशत सहमत नहीं होते क्योंकि उनकी शिक्षा उस समय के लिए ठीक थी जब समय बदल जाता है तो उसके साथ ही शिक्षा को भी बदलने की अवश्यकता होती है। इस वास्ते संत कहते हैं कि जिवित पूर्ण गुरु को मानो। ज़माने के हालात बदलते रहते हैं। एक जगह लड़ना भी पड़ता है और मुकाबला भी करना पड़ता है।

अगर वहां जाकर मैं सच्चाई वर्णन न करता तो मेरा हृदय मुझे यह आज्ञा न देता और अगर

सच्चाई वर्णन करता तो वे लोग नाराज़ होते । वहां खुशामदी शब्द प्रयोग करने पड़ते इसलिए मैं वहां नहीं गया और आपको अपना अनुभव इस सत्संग में बता रहा हूं । हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी थी इसलिए मैं शिक्षा को बदल रहा हूं । संसार में रहो जहां मुकाबला करने की आवश्यकता पड़े वहां खूब मुकाबला करो अगर तुम अपने स्वाभिमान को छोड़ दोगे तो जो भी आयेगा तुमको फुटबाल बना देगा ।

मैं दिल्ली में विश्वधर्म समेलन में गया वहां बाहर के देशों से बहुत से महात्मा आये हुये थे और पब्लिक भी काफी थी । मैंने पब्लिक की और पीठ फेर ली और महात्माओं से कहा कि पब्लिक को कुछ कहने की बजाये पहले स्वयं इकट्ठे बैठ के सोचो कि इस समय मानव जाति के कल्याण के लिए आप लोगों को क्या करना चाहिए। बर्तमान समय अनुसार नियम बनाओ कि जिससे दुनियां में सुख और शान्ति आये और मानव जाति आराम से रह सके । पिछले

महात्मा जो कुछ कर गये वे अपने समय अनुसार ठीक कर गये अब पिछला समय गया ।

पिछले ज़माने में शान्ति के लिये हवन किए जाते थे लेकिन अब हवन करना बहुत कठिन है क्योंकि न देशी घी मिलता है न आसानी से सामगरी और मेवा मिलता है और न ही आदमियों के पास सामान इकट्टा करने लिए इतना समय है इसलिए धर्म और उसके असूल आसान होने चाहिएं ताकि हरेक आदमी उस पर चल सके । जब राधास्वामी-मत की प्रणाली चली तो उस समय लोगों को इस ओर लाने के लिए बहुत सी रोचक और भयानक बातें शामिल कर दी गई । उसका परिणाम यह हुआ कि आज लोग असलियत से दूर हो गये और गुरुओं के पास जाके लूट गये इसलिए मैंने हज़ूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा अनुसार शिक्षा को बदला है । पता नहीं ठीक है या ग़लत है मगर बुद्धिमान सोचें कि मैंने ठीक कहा है या ग़लत कहा है । अहिंसा परमोधर्मः केवल मानव के मन को शान्ति देने के लिए है और दूसरों का दिल न दुखाने के लिए है । लेकिन आजकल हम लोग अपने बचनों से दूसरों के

दिलो को दुखाते हैं। यह महांपाप है और यह सबसे बड़ी अहिंसा है। दुख है कि मैं इतना पढ़ा लिखा नहीं हूं और अपने भाव को अच्छी प्रकार वर्णन नहीं कर सकता।

इस समय मानवता की आवश्यकता है। सब धर्मों के नेताओं को इकट्टे होकर फैसला करना चाहिए कि इस समय क्या करना चाहिए ताकि संसार में शान्ति आये। जैनमत वाले कहते हैं कि कीड़े मत मारो लेकिन कीड़ों को बचाते बचाते तुम स्वयं भूखे मरोगे। जिस ज्ञान की आजकल आवश्यकता है वह बताता हूं। सबसे पहले अपने आप की रक्षा करो। तुम लोग प्रकाश देखते हो, धन्य हो। प्रकाश को देखने के बाद तुमको जो अनुभव होगा वह तुम्हारी ही बासना के अनुसार होगा। जिस बासना को लेकर तुम अभ्यास करोगे तो उस अभ्यास के बाद तुमको जो अनुभव होगा वह तुम्हारी वासना की पूर्ति का इलाज होगा। मैं परमार्थ के लिए इस ओर आया था। मुझे ज्ञान हो गया कि मैं चेतन का बुलबुला हूं। ऐसे ही श्री महावीर स्वामी जी को बासना की पूर्ति के लिए अहिंसा परमोधर्मः का

संस्कार मिला और उनको अपने अद्धार का ज्ञान हुआ। यह मेरी समझ में आया है। प्रकाश का साधन बहुत अवश्यक है। शब्द का साधन इस संसार के चक्कर से निकल जाने के लिए है यह मेरा अनुभव है। प्रकाश का साधन करने वाले की इच्छा पूरी होती रहती है। यह आदमी जो सामने बैठा हुआ है इसने मुझे लिखा था कि महाराज! मुझे अभ्यास में और स्वप्न में स्त्रियें दिखाई देती हैं और स्वप्न में एक स्त्री से मेरा चिवाह हुआ। क्यों?' यह कामी है। इसके मन में हर समय स्त्री का विचार रहता है। इसने मेरे सामने यह बात मानी है। इसलिए साधन सबके लिए नहीं है। मगर आजकल गुरु लोग क्या करते हैं? जो भी आया नाम, जो भी आया नाम। इन्होंने संसार को नाम नहीं दिया अपने नाम के लिए और धन और मान के लिए नाम दिया है और लोगों को मूर्ख बनाके लूटा है। सबसे पहले अपनी बासना को ठीक रखो और जो कुछ चाहते हो उसकी की प्रबल इच्छा रखो।

सबसे आवश्यक अहिंसा यह है कि अपने मन को मत दुखाओ लेकिन यह तब हो सकेगा जब तुम निष्काम कर्म करोगे। अगर तुम स्वार्थी हो तो सुम्हारे मन में जलन का आना आवश्यक है।

सब को राधास्वामी !

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के एक पुराने शिष्य श्री बरकत राम की जीवनी सत्यता के दृष्टिकोण से।

कल मुझे ओमप्रकाश साही का पत्र आया। इनके पिता स्वर्गवास हुये वे लाला बरकत राम दाता लाल जी महाराज के शिष्य थे। उनके जीवन की कुछ बातें व दाता के संस्मरण पत्र में हैं और वे चाहते हैं कि जो उन्होंने लिखा वह मानव मंदिर में छपवा दूं। मानव मंदिर में संतमत की शिक्षा है या इंसानियत की। जिस गर्ज़ के लिये मैंने यह मंदिर स्थापित किया व काम करता हूं यह है कि संसार के प्राणी जो हकीकत चाहते हैं उनको कर्म भोग व दाता जी की आशा व बाबा सावन सिंह जी की हिदायत के अनुसार ज़ाहिर करूं।

मैं बड़े हौंसले के साथ कहता हूं कि कोई भी मरी हुई हस्ती चाहे वो राम है जो अयोध्या में पैदा

हुआ, चाहे वो कृष्ण है जो गोकुल में पैदा हुआ व चाहे वो कोई गुरु है जो जन्म लेकर मरता है, ये कोई भी तुम्हारे अन्तर में जाकर कोई सहायता नहीं कर सकता। मैं अगर ग़लत कहता हूं तो मौजूदा गुरु मेरी बात का खंडन करें। जब मैं ज़िंदा होशियारपुर में बैठा हुआ न अमरीका, न अफ्रीका, न यूरोप जाता हूं, मगर मेरा रूप वहां के लोगों के अन्तर प्रकट होता है तो मौजूदा गुरु या महात्मा मरते समय लेने जाते हैं या जो मदद करते हैं। वो मदद करने वाला वो समझ है, वो ज्ञान है, वो विवेक है जो जीव को इस मन के चक्कर से निकाल कर प्रकाश रूपी पारब्रह्म व शब्द रूपी शब्दब्रह्म में ले जाता है मैं श्री बरकत राम जी को अच्छी तरह से जानता हूं। उनका प्रेम भी दाता के साथ बहुत था। जो वे लिखते दूसरों को बहुत पढ़ाया करते थे। मेरे जिम्मे तालीम बदलना है गो इसकी अधिकारी दुनियां नहीं है। इसी अज्ञान को फैलाकर इंसान ने एक दूसरे के सिर काटे व दुश्मनी में बांट दिया इस दुनियां में ज़िंदा आदमी की कोई कदर नहीं करता, मरने के बाद उनकी यादगारें उनकी प्रशंसा करने

ᅮ लिए उनके जन्म या मौत के दिन जल्सा करते हैं
। प्रशंसा करते हैं। असली व सच्चा गुरुमत ऐ
ारत वासीयो! सारी उमर की खोज के बाद
हता हूं कि यह तुम्हारा अपना ही मन है। तुम्हारा
ापमा ही मन गुरु व अपना ही मन चेला है। मन
ो सच्चा रास्ता दिखाना, उन नियमों को बताना
जिनसे दूसरे इंसान को कष्ट न हो। आजकल
ोग सिद्धि शक्ति में पड़े हुये हैं। ये सिद्धि ख्याल
ी ताकत का काम है और विश्वास का काम है।
ह अनुभव मुझे जीवन में हुआ। लोग कहते हैं
लां गुरु सतलोक गया ज्योति ज्योत समा गया।
ह उनका विश्वास है, संतों के मार्ग में बार-बार ये
ी लिखा है "जीवित गुरु को पूज तेरे भले की कहूं"

शब्द रता गुरु ढूंड तेरे भले की कहूं।

मगर जो ऐसा गुरु होता है जो शब्द या प्रकाश में
हता है और उसे अपनी कोई जाति गर्ज़ या डेरे व
थ की गर्ज़ नहीं है। वो ही संत सदगुरु कहलाता
।

मैं श्री बरकत राम की ज़िदगी को जानता हूं।
मेरे पास आते रहते थे, मुझसे प्रेम करते थे।

यदि वे मेरे गुरु भाई न होते तो मैं उनकी लाइफ छपवाता। यह इंसानी फितरत है कि वो पिछले मरे हुये बुजुर्गों की तारीफ करता और उनको पूजता है। अगर कहीं मरे हुये या जिंदा गुरु का स्वप्न में दर्शन हो जाय तो वो फूला नहीं समाता। इसलिये मैं इस लेख द्वारा अपने उस फर्ज़ को जो दाता ने मुझपर लगाया पूरा करता हूं। और बड़े जोर से कहूंगा कि ऐ इंसान ! पिछले बुजुर्गों को रोना उनकी यादें मनाना तेरी भूल है, अज्ञान है। संतमत में गुरु शब्द है और उसके चरण प्रकाश हैं। इसलिये पढ़ने वालों को भी कहूंगा कि फकीरचंद या किसी और गुरु की सिफ्तें करने से बेड़ा पार नहीं होगा किसी कामिल गुरु की बात सुन कर उसपर अमल करने से होगा। जो व्यक्ति गुरु को इंसान समझते हैं वे दुःख सुख जन्म मरण से मेरे अनुभव के आधार पर जो साइंस को साथ लिये है, कोई इस भवसागर से पार नहीं हो सकता। इस वास्ते किसी निर्बन्ध पुरुष की संगत करो, उसकी बाणी को समझो तब बेड़ा पार होगा। इसके सबूत में दाता दयाल का शब्द है।

गुरु रूप न समझे कोय।
भरम में पड़े अज्ञानी।

कबीर ने भी कहा है।

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अंध।
दुःखी होय संसार में आगे जम का फंद।

जीवनी पर प्रकाश

स्वर्गीय बरकत राम साही

लेखक :- "शिव उपदेश" राधास्वामी संतमत

स्वर्गीय बरकत राम साही ने अविभाजित पंजाब प्रांत की रियासत कपूरथला में मुहल्ला मलकाना, शालामार रोड़ पर खत्री परिवार में जन्म लिया। इनके पिता जी का नाम स्वर्गीय नत्थूमल जी साही था जो रेवेन्यू डिपार्टमेन्ट कपूरथला में अमीन थे। इनके तीन पुत्र थे। तुलसी राम, खुशी राम, बरकत राम।

स्वर्गीय बरकत राम जी ने अपनी प्राथमिक शिक्षा पंजाब में व उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश में प्राप्त की थी। वे शरीर के सुढौल व लम्बे कद के खूबसूरत जवान थे। सैन्ट्रल प्रोविन्स ने इन्हें चुनकर फोरेस्ट ट्रेनिंग के लिये देहरादून भेजा। वहां वे डी० डी०-आर० की परीक्षा में प्रथम उत्तीर्ण हुए व उन्हें सोने का मेडल देकर शोभित किया गया।

उपरान्त उन्होंने मुलाज़मत सी० पी० में की। बाद में रियासत ग्वालियर के जंगलात के मैहकमा में कनज़रवेटर का कार्य अंजाम दिया। बाद में उड़ीसा सरकार ने इन्हें अपने शासन में ले लिया। वहां गंठिया रोग से अस्वस्थ रहने के कारण इन्हें नौकरी छोड़कर घर बैठना पड़ा। करीब आठ वर्ष तक गंठिया व जोड़ों की बीमारी में उन्हें भंयकर शारीरिक कष्ट सहने पड़े व आर्थिक स्थिति भी बहुत गिर गई। चूंकि शुरू से ही संतमत में विश्वास रखते थे, साधू संतों की सोहबत करते थे, ईश्वर भक्त थे, उन्होंने सब कष्ट सब्र से सहे। बड़े दुःखी होने के बावजूद उन्हें शरीर का अन्त जल्द नज़र आता था। ईश्वर से अपनी शरण में लेने की प्रार्थना करते व शरीर का अन्त चाहते रहते थे।

प्रभू की कृपा हुई महात्मा शिवब्रतलाल जी महाराज का साया नसीब हुआ जो "राधास्वामी" संतमत के उस समय के पहुंचे हुये परम संत थे, या यों कहें कि भगवान ने मनुष्य के चोले में अवतार लिया हो। उन्होंने दुःख सहने का दिलासा व "नाम" की कमाई कर सुरत शब्द योग अभ्यास के

द्वारा इस संसार को पार करके प्रभू की शरण में पहुंचने की युक्ति बताई। उनका शरीर इतना दुर्बल हो गया था कि चलना फिरना तो दूर रहा नित्य का शौच आदि भी खटिया पर लेटे करना पड़ता था। अगर कोई शक्ति उन्हें इस दुःख को सहने की थी तो वह थी सच्चे गुरु द्वारा दिया हुआ नाम "राधास्वामी"। राधा आत्मा, स्वामी मालिक, इस प्रकार राधास्वामी नाम आत्मा के मालिक का है, इस नाम की रटन से उनके मन को धैर्य मिलने लगा व दिल दुःख को दुख न मानकर उसी में लीन होने लगा।

महात्मा शिव व्रतलाल जी ने कृपा कर, जब कभी भी इन्होंने मुशकलात का सामना किया उसका समाधान समय समय पर पत्रों द्वारा कराया जो सिलसिला उनके जीवन काल तक चलता रहा। गुरु जी की अभ्यास की युक्ति का अमल करने पर बरकत कुछ का कुछ हो गया या इस प्रकार कहा जावे कि उन्हें सुख की प्राप्ति होने लगी। बरकत की सदा इच्छा रही कि इस जीर्ण चोले से छुटकारा मिले। अपने जीवन काल में ही जब वे दुःख में गुज़र रहे

थे, जो "शब्द" उनके दिल में उत्पन्न हुए व दिल से निकले वे संतमत का निचोड़ था उनके ये "शब्द" शिव-उपदेश पुस्तक में बंद किये हुए हैं जिसे महात्मा शिव ब्रतलाल जी महाराज का आशीर्वाद था। यह इस प्रकार था जैसा कि पानी की बूंद समुन्द्र में विलीन हो गई हो।

"राधास्वामी" की मौज हुई, उन्हें अपनी शरण में लिया और इस अस्थाई शरीर से छुटकारा मिला। इस प्रकार बरकत राम ४८ वर्ष की अल्प आयु में ही माह (जुलाई गऊवधूली के समय सन् १९२९ ई० में इस संसार को छोड़ गये) उनकी पवित्र आत्मा अपने मालिक राधास्वामी की शरण में चली गई। जाते समय उन्होंने अपनी पत्नी व संतान चार पुत्र व एक कन्या को तकदीर के हवाले छोड़ा और कहा कि ईश्वर पर भरोसा रक्खो, वह ही सबकी सम्भाल करता है। उनकी पत्नी जिसे वे "रतन" के नाम से पुकारते थे, जिसने अपने बच्चों की देखभाल के अलावा पती की सेवा की थी, उनके चले जाने के बाद अपने को सम्हाल नहीं सकी एक साल बाद ही पती के वियोग में कुछ घंटों की बीमारी के बाद

ही संसार को छोड़ दिया और अपने पती की ओर रास्ता पकड़ा और दर्द भरी आवाज में अपने पूज्य ज्येष्ठ स्वर्गीय खुशी राम जी के बच्चों को सुपुर्द किया, जो खुद भी खुदा प्रस्त थे व अपने छोटे भाई बरकत राम को सदा प्यार करते थे।

आज करीव ५० वर्ष हो चुके हैं, जिस घर में यह प्राणी अपने परिवार में कपूरथले में रहता था खण्डर की शक्ल में वीरान पड़ा है। उस स्थान पर अनअधिकारी पुरुषों का कव्जा है मगर बरकत-राम द्वारा इन शब्दों की आवाज जो इस समय शिव-उपदेश नामी पुस्तक में कलम बंद है, लोगों के हृदयों में जीवत है। वह बरबाद नहीं हुई है। उनकी धुन प्राणी मात्र जहाँ भी सुनते हैं खिचे चले जाते हैं, यही बड़ी देन उन्होंने अपने बच्चों को ही नहीं समस्त प्राणी मात्र हेतु विखेर दी है। मनुष्य मात्र इसका लाभ उठाकर "सुरत शब्द योग" अभ्यास द्वारा, वक्त के सच्चे गुरुओं द्वारा बताई युक्ति से राधास्वामी की शरण में पहुंच सकता है व सच्च खंड में स्थान पा सकता है।

"राधास्वामी" नाम को इस प्रकार समझने का कष्ट करें :-

"राधा" धुन का नाम सुनाऊं "स्वामी" शब्द भेद बतलाऊं।
"धुन" और शब्द एक कर जानो जल तरंग सम भेद न मानो।
"राधा" आदि सुरत का नाम, "स्वामी" आदि शब्द निज धाम।
"सुरत" और "शब्द" और राधास्वामी, दोनों एक कर जानो।

"बरकत" के जीवन की चंद घटनायों पर प्रकाश निम्न प्रकार है :-

1. दुःख से व्याकुल हो जब उनकी पत्नी उनसे कहा करती थी कि हम बर्बाद हो गये तो वे इस प्रकार दिलासा दिया करते थे।

"मत सोच कर, राधास्वामी हैं रखवारे"। उनके ही भरोसे रहो, बच्चों का भविष्य उनके सुपुर्द करो वह उज्जवल होगा। आज उनके द्वारा छोड़ी हुई संतान, आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से भरपूर है, सच्च है राधास्वामी ही उनके रखवारे रहे हैं।

2. युवा अवस्था में जब वे शिक्षा ले रहे थे तब उनकी तीव्र बुद्धि की सब ही सराहना करते थे, उनकी रुचि अच्छे खिलाड़ी होना, अच्छा घुड़सवार, तैराक व बुलन्द-आवाज में गाना वे गाने के शौकीन थे। चूंकि अपने परिवार में अपने भाई बहिनों में सबसे छोटे थे, बड़े प्रिय थे। उनका सबसे बड़ा गुण था संयम का अनुसरण व स्पष्ट वादी, निडरता से सच बोलते थे मन में कोई लग लगाम नहीं रखते थे। बोलने में प्रिय भी थे।

3. मुलाजमत के दिनों में जितना समय इनका निकला वे सदा बेधड़क रहे, किसी के नाजायज़ दबाव में नहीं रहना, सच बोलना व सच्चा रास्ता पकड़ना, ग्वालियर रियासत की नौकरी के ज़माने में जब वे कन्ज़रवेटर थे तब एक बार अकाल पड़ा। उन्होंने महाराज की अनुमति लेकर समस्त गांव वालों को ज़ंगल से घास पशुओं के लिए मुफ्त काटने की सहूलियत दी, साथ ही साथ सरकारी घोड़ों के लिये उनके द्वारा घास की मदद उपलब्ध कराई। इस सद्बुद्धि की बड़ी सहारना हुई व वे लोकप्रिय हुए।

4. शिकार का विभाग चूंकि इनकी देख भाल में था एक मर्तवा वायसराय हिन्द जब शिकार को राज्य ग्वालियर में पधारे, शिकार करते समय हाथी पर बैठे उनके हाथ से वगैर निशाना लगे बंदूक गिर गई व शेर हाथी पर कूदा, बरकत राम जी ने बड़े साहस का परिचय दिया। मचान पर से कूदकर शेर को निशाने पर लेकर, वायसराय साहब के शिकार को कामयाव बनाया। मेहमान महोदय व व महाराजा ग्यालियर ने इसे सराहा।

5. हमेशा उन्होंने अपने को कभी किसी व्यक्ति से बड़ा नहीं समझा। छोटों को सदा अपने नज़दीक समझा कोई भेद नहीं बरता। जब अपने घर नौकरी से वापिस आते, शाम के वक्त सादा लम्बा चोला साधुओं जैसा पहन कर ऊपर छत पर जाकर एकान्त में ईश्वर की याद में सूफियों के भजन बुलन्द आवाज़ में गाते व इकतारा उसके साथ बजाते। उन्हें इस बात की कतई हिचिक नहीं थी कि लोग इस तरह देखकर क्या चर्चा करते हैं। चर्चा महाराजा तक थी। जिन लोगों को उसकी इस प्रकार दूर दर्शिता व साफ सुथरी बातों से फायदा नहीं होता

था और अपना ग़लत कार्य नहीं कर सकते थे आये दिन इस प्रकार का प्रचार करते रहते थे कि बरकत राम तो साधु है। ऐसा कह करके महाराजा के कान भरते रहते थे। परन्तु महाराजा हंसकर टाल देते थे।

6. शिवरात्रि को महात्मा शिवव्रतलाल जी महाराज के भण्डारे में शामिल होने के लिये सन् १९२२ में बरकत राम जी अपनी पत्नी सहित गये। उस समय गोदी में जो बच्चा था वह उनके साथ था, दूसरे छोटे बच्चों को वे छोड़ गये थे। भण्डारे के समय, जब समुदाय के बीच उनकी पत्नी ने कहा कि जब से मेरे इस गोदी के बच्चे ने जन्म लिया है उनके पती शारीरिक दुःख से पीड़ित हो गये हैं व उन सबका जीवन कष्ट में पड़ गया है।

महात्मा जी ने उन्हें दिलासा दिया व कहा कि कर्मों का फल कोई नहीं टाल सकता उससे तो गुज़रना ही है। यह दुःख सदा नहीं रहेगा। बाद में अच्छा समय सुख में बदलेगा, व उसी दिन शिवरात्रि पर भण्डारे के समय, उन्होंने बच्चे को उनकी पत्नी के पास से लेकर अपनी गोद में बिठाया व अपने

हाथों से उसके तिलक लगाया, और जो रेशमी चादर वे ओढे हुये थे उसे उतार कर दी व अशीर्वाद देकर बच्चे को उठाने का आदेश दिया। वापिसी पर पती पत्नी ने उसके फराक इत्यादि कपड़े सिलवाये और जो नाम उन्होंने दिया था वही नाम 'स्वामी' दास से उसे अपने जीवन से बुलाते रहे। वही अशीर्वाद आज तक कायम है। स्वामी दास परिवार में सर्व प्रिय है। महात्मा शिवब्रतलाल जी की इस तरह आशीर्वाद देने में क्या भावना थी, यह समय ही बतायेगा।

7· बरकत राम जी सदा अपने जीर्ण शरीर को छोड़कर प्रभु राधास्वामी की शरण में जाने की प्रार्थना करते रहते थे और उसी समय में उन्होंने अभ्यास कर अपने लिए संसार की माया से जो आत्मा पर लिपटी हुई है, अपने को दूर कर अपने में सिमटने की कोशिश की, व अपने को दसवें द्वार (द्विप चदा अथवा तीसरा तिल) पर लाकर खड़ा करने में कामयाव हुए व गुरु द्वारा सच्चे नाम राधास्वामी के सहारे अपने अध्यात्मिक क्षत्र में आगे बढ़ने का प्रयत्न चालू रखा। व उस

सुखमय भण्डार, प्रकाश अत्यादि का सुख अनुभव किया। जो बरकत राम जी के ही शब्दों में शिव उपदेश में इस प्रकार अंकित है।

सोई आज सुरत मेरी जागी।
गुरु की दया अपार भई, हे भक्ति प्रेम प्रीति रस पागी।
सबके दुःख दारुन बहू भोगे, अंतर समाध अब लागी।
घंटा शंख सहसदल बाजा, अनहद धुन में होगी रागी।
लेटे बैठे खड़े उठाने रहूं सदा गुरु पद अनुरागी।
राधास्वामी दया दृष्टि हो, दया लिये मैं रहूं बड़भागी।

राधास्वामी की कृपा बड़ी हुई, उन्होंने इस संसार से अस्थाई शरीर को छोड़ने की तैयारी की। उसी काल में, सन् १९२८ में महात्मा शिवव्रतलाल जी महाराज का आगमन कपूरथले में हुआ व उन्होंने बरकत राम जी को दर्शन दिये। बरकत राम खटिया से नीचे गिरकर उनके चरणों में लिपट गये व उनकी आरती उतारी, महात्मा जी ने उन्हें अब अधिक समय तक दुःख सहते रहने की ज़रूरत नहीं ऐसा कहकर यह चोला छोड़ने की आज्ञा दी व चले गये। घर भर में खामोशी छा गई व उनकी पत्नी अपने बच्चों से लिपट कर फूट फूटकर रोने

लगी । उपरान्त बरकत राम जी ने उन्हें शान्त रह कर दुःख का सामना करने को समझाया ।

एक दिन इस संसार से अस्थाई शरीर छोड़कर जाने की तैयारी की और परिवार वालों को कहा, मुझे ऊपर की मंजिल में ले चलो, मेरा अब समय और प्रभु राधास्वामी की शरण में जाने का आ गया है । उनकी पत्नी ने आज्ञा का पालन किया व उनसे प्रार्थना की कि वे अपना ध्यान संसार से छोड़ें और राधास्वामी की तरफ लगावें । इस प्रकार इस महान आत्मा ने अपने ध्यान राधास्वामी के सचखंड की ओर जाने की तैयारी की और उनकी आत्मा सदा के लिए उनकी शरण में गई ।

उस सयय एक बड़ी समस्या खड़ी हुई जब उनके बड़े लड़के ने कहा कि उन्होंने अपनी सुरत चढ़ा ली है अंतिम संस्कार को रोका जाये । तार द्वारा महात्मा शिवब्रतलाल जी महाराज को सूचित किया गया व करीब १५ घंटे बाद जब जवाब प्राप्त हुआ कि बरकत राम की आत्मा राधास्वामी की शरण में पहुंच गई है । उनके देह का अंतिम संस्कार किया गया ।

बरकत राम जी अब इस झूठे संसार में नहीं हैं जिसे मनुष्य मात्र अपना सब कुछ समझता है, मगर उनकी आत्मा से निकले हुए शब्द जो मनुष्य को राधास्वामी की शरण किस प्रकार पकड़ना चाहिए जीवित हैं व अमर हैं। "शव उपदेश" पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि दुःख के कारण ही उन्होंने मालिक को याद किया और दुःख ही उन्हें प्रिय है।

दुःख मोहे प्यारा लागे साधो, दुःख मोहे प्यारा लागे।
दुख के भय से सतगुरु पाया, प्रेम प्रीत रस पागे।
जो कोई सुख की इच्छा करते, दुःख देखेंगे आगे।
हम तो दुख के प्रताप से भाई छोड़ द्वंद जग भ गे।
बरकत राधास्वामी चरण शरण ले अचल भक्ति वर मांगे।

राधास्वामी

१७ मार्च १९७९

(ओमप्रकाश साही द्वारा प्रकाशित)

वार्षिक बैसाखी सत्संग 1979 पर श्री शिव नन्दन भारद्वाज प्रिंसीपल (रिटायर्ड) प्रधान मानवता मंदिर का भाषण

राधास्वामी ! परमतत्व, सर्वाधार, चैतन्यसागर की हम शरण हैं, जिस के हम सब बुलबुले हैं ।

परम आदरणीय । परमदयाल जी महाराज, आप के इस जनता जनार्दन की सेवा के महान केन्द्र में इस शुभ अवसर पर पधारे हुए सब महात्माओं, माताओं, भाईयों व बहनों का आपकी ओर से व मानवता मंदिर कमेटी के सभी सदस्यों की ओर से अपनी ओर से और मानवता मंदिर के सभी कर्म चारियों की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूं । इस सत्संग का मुख्य विषय रहेगा ।

घूंघट के पट खोल, तोहे पीव मिलेंगे ।

इसके इलावा अन्य रूहानी विषयों पर भी, पधारे हुए महात्मा महानुभाव, प्रकाश डाल कर हमें कृतार्थ करेंगे ।

खुशनुमा दुनियां में, वह हाजत रवा मीनार हैं ।
रौशनी से जिनकी, मल्लाहों के बेड़े पार हैं ॥

मैं अपने आप को ब्रह्मविद्या या आत्म साइंस का एक अदना सा विद्यार्थी मानता हूं । अभी तक मेरी तुच्छ समझ में इतनी ही बात आई है कि "फरिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना मगर इस में पड़ती है मेहनत ज्यादा" हम सब व्यक्ति जन्म से आदमी तो हैं पर इन्सान या मानव बनने जा रहें हैं । हमारे अन्दर दानवता भी मौजूद है, उसे निकाल कर ही सच्चे मानव बन सकेंगे । पूरा मानव ही देवता या फिरश्ता हो सकता है । आज हम देख रहे हैं कि दानवता ने मानवता का स्थान ले रखा है । मानवता को पुनः अपने भीतर जगाना व बलवान बनाना ही सच्चा युग-धर्म है । आने वाले संसार में मानवता धर्म ही जनता का कल्याण कर सकेगा न कि फिरकादारी वाले धर्म जिन्होंने मनुष्य जाति के टुकड़े २ कर रखे हैं । इसी आवश्यकता को, अपने लम्बे अनुभव के आधार पर समझ कर, श्री परम

दयाल जी महाराज ने "मानवता" का झण्डा गाड़ा और तन मन धन से इसका प्रचार करने में रात दिन तत्पर हैं। इनकी प्रभावशाली आवाज यूरप व अमरीका तक गूंज गई। वहां भी मानवता के केन्द्र कायम हो चुके हैं।

मनुष्य स्वभाव से ही खुशी का इच्छुक है। खुशी क्या है? बेगम, बेखौफ और अडोल जीवन। यह खुशी सच्ची मानवता से प्राप्त होती है। सच्ची मानवता मुकम्मल इन्सानीयत का जीवन है संतुलित जीवन है। सवांग पूर्ण जीवन का नाम मानवता है। शरीर से, दिमाग़ से व रूह से दानवता का परित्याग करते करते अपनी भीतरी मानवता को प्रकट कर लेने के वास्ते ही इसकी साधना है। इस साधना में मूल अर्थात रूह को सींचा जाता है न कि पत्तों पर पानी छिड़का जाता है।

हर एक व्यक्ति की सुरत नहीं, केवल सच्चे मानव की रूह दानवता याने पशुता के भार से छूट कर ऊपर के मुकामों की तर्फ उठने के योग्य हो सकती है और अमर सुख पा सकती है। इसलिये मानवता अनिवार्य है। सच्ची मानवता जनता

के सामने घूंघट या पट या पर्दा लटक रहा है। ज्ञानवान गुरुदेव की शरण लेकर, उसकी बताई हुई युक्ति से स्वयं साधना करने पर उस पर्दे की पहिचान हो जाती है और उसे हटाने में सफल हो सकता है।

इस मधुर मिलन का रहस्य खुद-यावी या स्वरूप-निष्ठा में है। परन्तु इस अद्वेय पद का रास्ता द्वैत की गली में से होकर जाता है। लदय या आदर्श या *Ideal* के ऊपर परवाने की तरह अपने पर, अर्थात अपना झूठा आपा, हंसते २ बलिदान करना पड़ता है। तब जाकर अमर पद में प्रवेश होता है।

राधा तड़प रूपिणी बनी हुई अपने स्वामी के ध्यान में अपने को खो देती है या यूं कहो कि भगवत प्रेम उसको उठा कर अपने आलिंगन में लेकर अपने से एक कर लेता है। यह मधुर मिलन निश्चित है, यदि राधा की भक्तियां चाह अनन्य हों, सती की चाह हो. व्यभिचारिण जैसी चाह न हो।

ऐसी चाह या लगन जो कि आवश्यक शर्त कही गई हैं, केवल सच्ची मानवता वाले साधक में ही उपजती है। दानवता वाले व्यक्ति में उसी तरह नहीं उपजती जिस तरह ऊसर भूमि में डाला हुआ बीज।

राधा का स्वामी राधा से भी बढ़ कर उत्सुक है, मधुर मिलाप प्रदान करने के वास्ते। परन्तु 'राधा' यदि 'धारा' बनी रहना त्याग सके।

चाखा चाह प्रेम रस, राखा चाहे मान।
प्रेम गली अति सांकुरी, तामें दो न समान।

हजरत बू अली कलंदर फारसी के ब्रह्मज्ञानी कवि कहते हैं :- नेसती आगाह अज़ लुतफे खुदा, हमूं आशिक हर ज़मां बीनद तुरा ? अर्थात हे राधा तुझे भगवान के प्रेम की सुध नहीं, वह तो हर क्षण तुझे प्रेमी की तरह पड़ा ताकता है, घूंघट के पीछे से, तूने ही सच्ची राधा बन कर मानवता के गहने पहन कर उसको घूंघट का पर्दा हटाने के लिये बेताव याने उत्सुक बनाता है। आज कर ले या कल कर ले या अनेक जन्मों के दुःख सहकर फिर जाग कर सच्चा प्रेम करले और "राधास्वामी" नामक अमर सुख को प्राप्त कर ले।

॥ राधास्वामी"

1. A Word to Americans
2. A Word to Canadians
3. Manavta the true religion
4. Religious Research
5. Weight of Soul
6. Truth Always Wins
7. Essence of Truth
8. Science of God Realization
9. True Sanatan Dharama or True Religion of Humanity
10. Jeewan Mukti
11. Art of happy living

जिन को ज़रूरत हो वह मंगवा सकते हैं हम बिना मूल्य भेज देंगे। मगर यह मुफ्त का काम कब तक चलेगा ? इस लिये जो सज्जन यह समझते हैं कि जो कुछ मैं ने इन किताबों में लिखा है इस में कुछ सच्चाई है, इस पर आचरण करने से इन्सान का पारिवारिक, सामाजिक और आत्मिक जीवन सुधर कर निर्वाण को प्राप्त हो सकता है तो यथा शक्ति मन्दिर की सहायता करें ताकि यह सब काम जारी रखा जा सके।

सरकार के आयकर के नियमानुसार ट्रस्ट वालों को साल में जितनी आय अथवा दान आता है वह उसी

साल में खर्च करना पड़ता है इसलिये मैंने जनता, विशेष कर गरीब रोगियों के इलाज में सहायता करने के लिये तीन हस्पताल एलोपैथिक, डेन्टल ब होमियोपैथिक खोले हुए हैं मगर मुसीबत यह है कि बजाय गरीबों के अमीर आदमी अधिकतर इलाज कराने के लिए आते हैं। इस लिये अगर कोई सज्जन इस काम में सहायता करना चाहता है तो करे मगर यह विनती अवश्य करूंगा कि जो धनी लोग हैं वह यहां हस्पताल से मुफ्त दवाई न लें।

भारत वासियो ! मैंने जो कुछ किया निज स्वार्थ या संतमत के पक्ष में इसे सच्चा सिद्ध करने के लिये नहीं किया। मालिक के मिलने की तलाश थी जिस को हम ईश्वर परमेश्वर समझते थे। मेरा भाग्य अथवा दुर्भाग्य इस संतमत या राधास्वामी मत में ले आया। यहां इन संतों ने तमाम धर्मों, वेदान्त या सूफीमत तक का भी खण्डन किया हुआ है। आत्मा खण्डन सहन नहीं कर सकती थी इसलिये प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज ने काम दिया था। तुम ही सोचो राधास्वामीमत वालों की किताबों में संतों की इतनी

बड़ाई लिखी हुई है कि वह ईश्वर, परमेश्वर के पैदा करने वाले है, बस, इसी एक राज़को जानने के लिये मैंने अपना जीवन खो दिया कि संतमत वालों के पास क्या चीज़ है जो ईश्वर और परमेश्वर को भी पैदा करने वाले समझते हैं। दाता दयाल जी महाराज पर मेरा विश्वास तो नहीं टूटा मगर बानी भेद नहीं देती थी। इसलिये प्रण किया था कि जो समझ में आयेगा बता जाऊंगा और दाता जी ने कहा था कि शिक्षा बदल जाना। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने भी हुक्म दिया था कि निर्भय होकर काम कर जाना, सो कर चला, मेरा निज अनुभव मानता है कि संत बनना कोई सरल काम नहीं है। मुझ पर समय समय पर संतपने को हालत तारी होती है, चौबीस घण्टे नहीं। अब यह प्रार्थना है कि यह संसार मेरे लिए सदा के लिये लोप हो जाये और अपनी हस्ती खो कर ज़ात में समा जाऊं मगर यह उसकी इच्छा है।

फकीर

राधास्वामी जेनरल सत्संग ट्रस्ट वाराणसी की कार्यकारिणी का चुनाव

इस वर्ष शिवरात्रि के भंडारे पर नई कार्यकारिण का चयन हुआ है, जिसको मैं नीचे दे रहा हूं। आप इसे मानव मन्दिर में छपवाने की कृपा करें और परम दयाल जी को भी इसकी जानकारी कराने की कृपा करें तथा जब से मैंने कार्य कर ग्रहण किया है, उसकी प्रभति रिपोर्ट भी भेज रहा हूं, जिसको परम दयाल जी को जानकारी कराने के साथ-साथ मानव मंदिर में छपवाने की कृपा करें।

राधास्वामी जरनल सत्संग ट्रस्ट राधास्वामीधाम बाराणसी के गवर्निंग कौसिल के पदाधिकारी एवं सदस्य गण :-

प्रेसीडेन्ट :-परमदयाल परमसन्त पं. फकीर चन्द जी महाराज

चेयरमैन :-श्री डाक्टर राणा राम सिंह माधोपुर गोरखपुर।

सदस्य गण :-१) आचार्य श्री प्रेमानन्द राय

२) डा० सतनाम सिंह खानपुर मगरहा मिर्ज़ापुर

३) श्री सच्चिदानन्द सिंह, जोगामुखाहिब गाजीपुर

४) श्री रामदेव अम्बस्ट, एडवोकेट, खानपुर वाराणसी

५) श्री अवधेश सखखरे, माधोपुर, गोरखपुर

कार्यकारिणी के पदाधिकारी एवं सदस्य गण :-

१) सैक्रेटरी :-श्री पारस नाथ जी जंगीगंज, बाराणसी

२) सहायक सैक्रेटरी :-श्री शोमनाथ जी राधास्वामी-धाम वाराणसी

३) कोषाध्यक्ष :-श्री छोटेलाल जी जंगीगंज वाराणसी

४) सूचनाधिकारी :-श्री हूबलाल जी राधास्वामीधाम वाराणसी ।

५) सहायक सूचनाधिकारी :- श्री राम चन्दर जी राधास्वामीधाम- वाराणसी ।

६) सदस्यगण :-

१) श्री शीतल प्रसाद जी राधास्वामीधाम. वाराणसी

२) श्री मिठाईलाल जी ,, ,,

३) श्री राम राज जी ,, ,,

४) श्री शिव कुमार शर्मा ,, ,,

५) श्री हरीनाथ मौर्य ,, ,,

६) श्री बंगाली बिन्द ,, ,,

७) श्री रामलीला राव जी छतमी ,, ,,

८) श्री पारसनाथ मौर्य घनश्यामपुर ,, ,,

राधास्वामी ट्रस्ट का खाता दी बनारस स्टेट बैंक लिमिटेड गोपीगंज वाणारसी में 'राधास्वामी जरनल सत्संग, राधास्वामीधाम ट्रस्ट वाराणसी के नाम से है। जिसका पास बुक A/C No 4706 है तथा L/F No 7601 है।

भवदीय

सैक्रेटरी

आय व्यय तालिका (१६-१०-७८ से २८-२-७९ तक का)

आय			व्यय		
क्रम संख्या	विवरण	रु० पै०	क्रम	विवरण	रु० पै०
१.	सुरक्षा समिति फण्ड	१८८१-७०	१.	सुरक्षा समिति पर	१००-००
२.	राधास्वामी धाम ट्रस्ट फण्ड	३५११-३३	२.	राधास्वामी धाम के रख रखाव पर	१२५७-०७
३.	भण्डारा तथा प्रसाद फण्ड	१०७३-२५	३.	भण्डारा तथा प्रसाद पर	१४०९-१५
४.	शिव समाधि निर्माण फण्ड	२६६४-५५	४.	शिव समाधि के निर्माण पर	५०८-९०
५.	विविध खाता	३०६-५८	५.	विवध विषयों पर	५३९-००
			६.	वनारस स्टेट बैंक में जमा खाता पर	५३२५-००
			७.	नगद रुपया पास में	२९८-२९
	योग	९४३७-४१		योग	९४३७-४१